MPHIN/2021/83938

दैनिक पुष्पांजली टुडे

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 3 : अंकः 368 | ग्वालियर, बुधवार 18, सितंबर 2024 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

न्यूज ट्रैक

नेता ने दी यूनिफॉर्म उतरवाने की धमकी,

मध्य प्रदेश के ऊर्जाधानी सिंगरौली जिले के कोतवाली थाने का एक वीडियो इन दिनों सोशल मीडिया में जमकर ट्रेंड कर रहा है। वायरल वीडियो में थाने में टीआई और नगर निगम के अधिकारियों के सामने एक अपनी वर्दी उतारते नजर आ रहा है। इस घटना को देखकर हर कोई भौचक रह जाता है। सोशल मीडिया पर वायरल हुआ वीडियो 2 फरवरी 2024 का बताया जा रहा है, यानी 7 माह पुराना।दरअसल, 7 माह पहले जिले के कोतवाली थाना क्षेत्र के नाली निर्माण को लेकर कोतवाली थाने के,स्ढ्ढ विनोद मिश्रा और स्थानीय लोगों के बीच विवाद चल रहा था। विवाद के बाद नगर निगम के अधिकारियों व पुलिस के अधिकारियों ने मौका मुआयना किया और मामले का हल निकालने के लिए सभी लोग कोतवाली थाने पहुंचे। थाने में विवाद को सुलझाने की चर्चा हो रही थी, उसी दौरान भाजपा नेता व पार्षद पति अर्जुन गुप्ता,,स्ढ्ढ विनोद मिश्रा को धमकी देकर बोला कि तुम्हारी वर्दी उतरवा लूंगा। इस वजह से एसआई ने अपना आपा खो दिया और सबके सामने अपनी वर्दी उतार दी। घटना थाने में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई।घटना के बाद एसपी निवेदिता गुप्ता ने थाने के,स्ढ्ढ विनोद मिश्रा पर वर्दी फा?ने के मामले में कार्यवाही भी की, लेकिन 7 माह बाद अब एक बार फिर से इस मामले ने तूल पक? लिया। सोशल मीडिया में घटना का वीडियो वायरल किया गया है। फिलहाल इस पूरे मामले पर एसपी निवेदिता गुप्ता ने थाने का सीसीटीवी फुटेज लीक करने व सोशल मीडिया में वीडियो वायरल करने के मामले में जांच के निर्देश दिए है। वीडियो वायरल होने के बाद इस मामले में राजनीति भी उफान पर है। एमपी कांग्रेस ने सोशल मीडिया के हैंडल पर लिखा है, यह सत्ता की हनक है, भाजपा के पार्षद की धमक देखिए, एक वर्दीधारी को अपनी वर्दी फाड़ना पड़गई!!

भोपाल में रानी कमलापति की प्रतिमा के

सामने शख्स ने अश्लील गाने पर किया डांस,

भोपाल। एमपी की राजधानी भोपाल में रानी कमलापति की मूर्ति के सामने अश्लील गाने पर नृत्य करने का मामला सामने आया है। वहीं इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद सांसद आलोक शर्मा ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। रानी कमलापति की मूर्ति के सामने अश्लील डांस का वीडियो वायरल होने के बाद हिंदूवादी संगठनों और नेताओं में रोष व्याप्त है। सांसद आलोक शर्मा ने वीरांगना रानी की प्रतिमा के सामने अश्लील और आपत्तिजनक जाने पर डांस करने वाले युवक के खिलाफ एनएसए लगाने की मांग की है। इस मामले में आज भोपाल के सांसद आलोक शर्मा ने पुलिस कमिश्नर हरिनारायण चारी मिश्र को ज्ञापन सौपा है।

सांसद ने की कार्रवाई की मांग-सांसद आलोक शर्मा ने आरोपी के खिलाफ एनएसए लगाने की मांग करते हुए कहा कि महारानी कमलापति की प्रतिमा के सामने एक युवक के द्वारा अश्लील गाने पर नृत्य करके वीडियो बनाया गया। ये वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। उन्होंने कहा कि पुलिस ने एक युवक को हिरासत में ले लिया है। आरोपी भी पुलिस की 23वीं बटालियन में पदस्थ बताया जा रहा है, जिसका नाम जितेंद्र बताया जा रहा है। सांसद आलोक शर्मा ने कहा कि यह कृत्य संपूर्ण समाज और राष्ट्र का अपमान है। यह बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। वीडियो बनाने वाले दोषी के खिलाफ सख्त कार्रवाई होनी चाहिए।

कमिश्नर ने दी जानकारी-वहीं पूरे मामले की जानकारी देते हुए पुलिस कमिश्नर हरिनारायण चारी मिश्र ने बताया कि मामला सामने आने के बाद एक युवक को हिरासत में ले लिया गया है। हालांकि वो डांस के इस वीडियो को बनाने से इनकार कर रहा है, फिर भी तकनीकी आधार पर जांच की जा रही है। मिश्र ने कहा कि ये भी जांच की जा रही है कि वह पुलिस की 23वीं बटालियन में है या नहीं। बता दें कि रानी कमलापति की प्रतिमा के सामने अश्लील गाने पर डांस का वीडियो शनिवार को सामने आया था। इस वायरल वीडियो में भोपाल की रानी कमलापति का अपमान किया गया। ये वीडियो गिन्नोरी में स्थापित रानी कमलापति की मूर्ति के सामने बनाया गया था।

पीएम मोदी को क्या कोविड काल में हुआ था कोरोना? मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने खोला राज

भोपालः मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव ने पीएम नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर प्रधानमंत्री की जमकर तारीफ की है। एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मोहन यादन ने दावा किया कि पीएम मोदी ने व्यक्तिगत चर्चा में खुद बताया था कि उन्हें कोविड काल में कोरोना नहीं हुआ। मध्य प्रदेश के सीएम ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का अभिनंदन जिन्होंने उस कठिन समय में जीवन जिया जब सबको कोविड हो रहा था। मोहन यादव ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी को कोविड नहीं हुआ। उसका कारण क्या है व्यक्तिगत चर्चा में उन्होंने खुद ने बताया था। वह रोज शंख

बजाते थे। शंख ध्वनि करने का भी हमारा प्राचीन इतिहास है। इससे फेफड़े मजबूत होते हैं। जिनके फेफड़े मजबूत हैं उसके पास कोविड नहीं भटकता। कोराना काल में जिन लोगों को सांस के अंदर की कठिनाई थी उन्हें ही कोविड में मार पड़ी थी।इससे पहले मोहन यादव ने पीएम नरेन्द्र मोदी के 74वें जन्मदिन के अवसर पर आज भोपाल में आयोजित सफाई मित्रों के सम्मेलन में सहभागिता कर स्वच्छता ही सेवा-2024 पखवाड़ा का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में सफाई मित्रों और स्वच्छता चैंपियन्स को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित भी किया गया। सीएम ने कहा कि गत वर्षों में भोपाल के सफाई मित्रों को स्वच्छता सर्वेक्षण में 5 स्टार रेटिंग प्राप्त होने के उपलक्ष्य में प्रत्येक सफाई मित्र को 5,000 रुपये मान राशि प्रोत्साहन स्वरूप देने के लिए नगर पालिक निगम, भोपाल के खाते में धनराशि अंतरित की गई। इस अवसर पर उन्होंने स्वस्थ व समर्थ मध्यप्रदेश की दिशा में एक और महत्त्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए आमजन को सस्ती एवं गुणवत्तापूर्ण जेनरिक दवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य के साथ 50 जिला चिकित्सालयों में स्थापित प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्रों का भी शुभारंभ किया।

पत्थर से बंधे हाथ-पैर और कुएं में मिला मासूम बच्ची का शव, पिता बोला- मैंने उसे मार डाला, रेप का भी है शक

मध्य प्रदेश के गुना जिले में सनसनीखेज मामला सामने आया है। अपनी आठ वर्षीय बेटी की हत्या के मामले में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। डॉक्टर को संदेह है कि हत्या से पहले उसके साथ बलात्कार किया गया था। पुलिस अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी।पुलिस अधिकारी ने बताया कि बच्ची का शव एक हाथ और एक पैर पत्थर से बंधा हुआ था। उसके लापता होने के तीन दिन बाद मासूम बच्ची का शव शनिवार को एक कुएं में मिला है। जिला मुख्यालय से लगभग 75 किलोमीटर दूर चाचौड़ा पुलिस थाना क्षेत्र में बच्ची लापता हो गई थी।चाचौड़ा पुलिस थाना प्रभारी मचल सिंह मंडेलिया ने कहा कि लड़की के पिता की संभावित संलिप्तता के बारे में संदेह पैदा हुआ है, क्योंकि वह अपनी बेटी की तलाश में कोई दिलचस्पी नहीं दिखा रहा था।लापता होने से पहले पिता के साथ देखी गई मासूमशुरुआती जांच का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि लापता होने से पहले लड़की को आखिरी बार उसके पिता के साथ देखा गया था। उन्होंने कहा कि लड़की का शव मिलने के बाद पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद उसे उसके परिवार को सौंप दिया।पिता ने बताया- बेटी की हत्या की-मंडेलिया ने बताया कि रविवार सुबह लड़की के अंतिम संस्कार के बाद पुलिस ने उसके पिता को हिरासत में ले लिया।

फिरोजाबाद में पटाखा फैक्ट्री में जोरदार धमाके से कई घर गिरे, मलबे में दबने से 4 लोगों की मौत; 6 घायल

फिरोजाबाद- जिले के नौशेरा में एक घर में स्थित पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट हो गया। विस्फोट इतना तेज था कि आस-पास के कई घर गिर गए। हादसे के बाद कई लोग घर के मलबे में दब गए। अभी भी कई लोगों के मलबे में फंसे होने की आशंका जताई जा रही है। बताया जा रहा है कि धमाके के बाद कई घर गिर गए, जिस वजह से लोग मलबे के नीचे दब गए। अभी तक 10 लोगों को बाहर निकाला गया है, जिसमें से 4 की मौत हो गई है, जबकि 6 घायल हैं।आगरा रेंज के ढ्ढत्र दीपक कुमार ने बताया कि हादसे की सूचना मिलने के बाद पुलिस की टीम मौके पर पहुंची है, अभी यहां मौजूद लोगों का कहना है कि मलबे में और लोग दबे हो सकते हैं। टीम भी मौके पर पहुंच रही है। हम तेजी से बचाव अभियान चला रहे हैं। जो भी बेस्ट हो सकता था, वो हम लोग कर रहे हैं। लोगों को जो सदमा लगता है, उससे राहत देने की कोशिश की जा रही है। उन्होंने बताया कि इस गांव में स्थित एक घर में पटाखे का स्टोरेज किया जा रहा था, जहां विस्फोट हुआ। इस विस्फोट के प्रभाव से अगल-बगल के घर भी गिर गए हैं। अभी तक 10 लोगों को बाहर निकाला गया है, जिसमें से 4 लोगों की मौत हो गई है और जबकि 6 लोगों का इलाज चल रहा है। रिहायशी इलाकों इस तरह के गोदाम का लाइसेंस नहीं दिया जाता है। इसके नाम पर स्टोरेज का लाइसेंस गांव से काफी दूर एक जगह पर दिया गया था। इस तय जगह पर कोई लाइसेंस नहीं दिया गया था। उन्होंने कहा कि निश्चित तौर पर मामले में कार्रवाई की जाएगी। जो भी गलत करेगा, उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी

एशिया इटली की PM जॉर्जिया मेलोनी ने प्रधानमंत्री मोदी को दी जन्मदिन की बधाई,

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंगलवार को अपना 74वां जन्मदिन मना रहे हैं। इस मौके देश-विदेश से पीएम मोदी को जन्मदिन की शुभकामना के संदेश मिल रहे हैं। इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उनके 74वें जन्मदिन पर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर साझा किए गए एक खास संदेश के माध्यम से जन्मदिन की शुभकामनाएं दी हैं।

पीएम मोदी को जन्मदिन की शुभकामनाए-एक्स पर एक पोस्ट में जॉर्जिया मेलोनी ने कहा, ÷भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जन्मदिन की शुभकामनाएं। मुझे यकीन है कि हम इटली और भारत के बीच अपनी दोस्ती और सहयोग को मजबूत करना जारी रखेंगे, ताकि वैश्विक चुनौतियों का मिलकर सामना किया जा सके।÷ बता दें कि, पीएम मोदी का जन्म 17 सितंबर 1950 को गुजरात के वडनगर में हुआ था। नरेंद्र मोदी लगातार तीसरी बार भारत के पीएम चुने जाने वाले दूसरे प्रधानमंत्री हैं।

भारत-अमेरिका के रिश्तों से परेशान हैं चीन और रूस,

वाशिंगटन- अमेरिका के एक शीर्ष राजनयिक ने कहा है कि चीन और रूस, भारत-अमेरिका के मजबूत होते संबंधों को लेकर चिंतित हैं क्योंकि ये संबंध समाज में विविध आवाजों को महत्व देने के साथ ही समावेशिता, शांति और विवादों के शांतिपूर्ण समाधान को बढ़ावा देते हैं। प्रबंधन और संसाधन के उप विदेश मंत्री रिचर्ड वर्मा ने प्रतिष्ठित 'हडसन इंस्टीट्यूट' में भारत-अमेरिका संबंध पर टिप्पणियां करने के बाद एक सवाल पर कहा, ''आपको क्या लगता है कि चीन और रूस इस साझेदारी को लेकर इतने चिंतित क्यों हैं? क्योंकि हम दुनिया के बाकी हिस्सों में जीवन का ऐसा रूप पेश करते हैं, जो समावेशिता, शांति, विवादों के शांतिपूर्ण समाधान, कानून के शासन के बारे में है और यह समाज में हर किसी की आवाज सुनने के बारे में है।''मंत्री रिचर्ड वर्मा ने कहा कि भारत और अमेरिका के बीच संबंध अमेरिका के कुछ विरोधियों के तौर-तरीकों से ''बहुत अलग हैं।'' उन्होंने कहा कि इसी विशिष्टता के कारण राष्ट्रपति जो बाइडेन ने दोनों देशों के बीच रिश्तों को ''इस सदी का निर्णायक संबंध'' बताया है। उन्होंने कहा कि लगभग 20 साल पहले जब वह सीनेट में तत्कालीन सीनेटर बाइडेन और स्टाफ निदेशक टोनी ब्लिंकन के साथ खड़े थे, तो बाइडेन ने टिप्पणी की थी कि यदि 2020 तक अमेरिका और भारत सबसे करीबी दोस्त और भागीदार होते, तो दुनिया एक सुरक्षित स्थान होती।अमेरिकी राजनयिक ने कहा, ''मुझे लगता है कि यह समान विचारधारा वाले देशों के बारे में है।'' 'क्वाड' पर एक सवाल के जवाब में वर्मा ने कहा कि इसका उद्देश्य शांति, सुरक्षा, स्थिरता और समृद्धि को बढ़ावा देना है। अमेरिकी राष्ट्रपति के एक प्रवक्ता ने इस पहले बताया था कि बाइडेन अपने डेलवेयर स्थित आवास में क्वाड नेताओं के चौथे शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेंगे। इस साल क्वाड की मेजबानी भारत को करनी थी लेकिन अब वह अगले साल इस शिखर सम्मेलन का आयोजन करेगा।

अमेरिका में हिंदू मंदिर पर हमला।

अमेरिका में एक बार फिर से हिंदू मंदिर को निशाना बनाया गया है। न्यूयॉर्क के मेलविले क्षेत्र में स्थित बीएपीएस स्वामीनारायण मंदिर को असामाजिक तत्वों ने नुकसान पहुंचाया है। न्यूयॉर्क में भारत के महावाणिज्य दूतावास ने इस मामले को अमेरिकी प्रशासन के सामने उठाया है। दूतावास ने इस हमले की निंदा की है और इसे अस्वीकार्य करार दिया है। दूतावास ने इस कृत्य में शामिल अपराधियों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई करने का आग्रह किया है।

PM मोदी का 74वां बर्थडे, काशी विश्वनाथ मंदिर में काटा 74 किलो लड्डू का केक

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 74वें जन्मदिन के अवसर पर यहां श्री काशी विश्वनाथ मंदिर में विशेष पूजा एवं हवन किया और 74 किलो के लड्डू का प्रसाद भी बांटा। एक सरकारी बयान के मुताबिक यहां लगातार हो रही तेज बारिश के बीच मुख्यमंत्री ने अपने तय कार्यक्रम को जारी रखते हुए पहले काशी के कोतवाल बाबा काल भैरव के चौखट पर पहुंच कर मत्था टेका और बाबा की श्रद्धापूर्वक आरती की। इसके बाद वह श्री काशी विश्वनाथ मंदिर पहुंचे और धाम में स्थित ज्ञानवापी कूप के पास स्थित निकुंभ विनायक की आरती उतार कर विधि-विधान से पूजन किया।विश्वनाथ धाम में ही सीएम योगी ने हवन-पूजन कर नरेन्द्र मोदी के उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु होने की कामना की। इससे पहले योगी आदित्यनाथ ने स्वच्छता पखवाड़ा 'स्वच्छता ही सेवा' का आरंभ किया और 'नमो प्लॉगेथॉन' को हरी झंडी दिखाई। मुख्यमंत्री ने इस दौरान स्वच्छता स्वयंसेवकों को भी हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने कहा कि 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के शिल्पकार नरेन्द्र मोदी के 74वें जन्मदिवस पर यह आयोजन किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने स्वच्छता का संदेश देते हुए लोगों को झोला एवं 'स्वच्छता ही सेवा' टी-शर्ट भी भेंट की। 'नमो प्लॉगेथॉन' के तहत सैक?ों स्वयंसेवक स्वच्छता की मुहिम चलाएंगे। जोरदार बारिश के बीच ये स्वयंसेवक हाथों में छाता लिए रैली में शामिल हुए और 'भारत मां की जय', वंदे मातरम' के नारे लगाए।सीएम योगी ने प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिवस पर विशेष पूजा व हवन किया।पीएम मोदी को - पर यूं दी बधाई मुख्यमंत्री ने मोदी को उनके 74वें जन्मदिवस पर बधाई दी और उन्हें सच्चे अर्थों में भारत के 'अमृतकाल का सारथी' करार दिया। योगी आदित्यनाथ ने 'एक्स' पर लिखा, ''140 करोड़ देशवासियों के जीवन को सुखमय बनाने के लिए अविराम साधनारत, विश्व के सबसे लोकप्रिय राजनेता, 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के स्वप्न दृष्टा, हम सभी के मार्गदर्शक, यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को जन्मदिन की हृदयतल से बधाई।'' उन्होंने कहा, ''राष्ट्र प्रथम की पावन भावना से ओतप्रोत, अंत्योदय के प्रण और 'विकसित भारत-आत्मनिर्भर भारत' के लक्ष्य की सिद्धि को समर्पित आपके जीवन का हर क्षण हमारे लिए प्रेरणा है। आपके अभिभावकत्व में वंचितों को वरीयता प्राप्त हुई है। देश आज दुनिया का विकास इंजन बनने की दिशा में गतिशील है। हमारा लोकतंत्र दिनानुदिन मजबूत हो रहा है। आप सच्चे अर्थों में भारत के 'अमृतकाल के सारथी' हैं।'' उन्होंने लिखा, ''25 करोड़ प्रदेशवासियों की ओर से प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि आपको उत्तम स्वास्थ्य तथा सुदीर्घ जीवन की प्राप्ति हो और हम सभी को सदैव आपका मार्गदर्शन प्राप्त होता रहे।''

पाकिस्तान में पुलिस ने गिराई अहमदिया मस्जिद की मीनारें, DSP की निगरानी में हुआ पूरा काम

लाहौर- पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में पुलिस ने अल्पसंख्यक अहमदिया समुदाय की 40 साल पुरानी एक मस्जिद की मीनारों को कथित तौर पर ध्वस्त कर दिया। जमात-ए-अहमदिया पाकिस्तान यानी कि छ्वक्क ने सोमवार को इस बारे में जानकारी देते हुए कहा कि इस पूरी कार्रवाई को ष्ठस्क्क की निगरानी में अंजाम दिया गया। यह घटना लाहौर से करीब 130 किलोमीटर दूर देपालपुर के ओकारा में हुई। बता दें कि पाकिस्तान में अहमदिया मुसलमानों को पिछले कई सालों से लगातार निशाना बनाया जाता रहा है और अक्सर उनके इबादतगाहों पर हमले होते रहते हैं।छ्वक्क के

पदाधिकारी आमिर महमूद ने सोमवार को पूरी घटना के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि पंजाब पुलिस के 12 से ज्यादा पुलिसकर्मियों ने सुभान शाह में अहमदिया मस्जिद की मीनारों को ध्वस्त कर दिया और वहां लिखे शब्दों को भी मिटा दिया। उन्होंने बताया, 'पुलिस उपाधीक्षक की निगरानी में देपालपुर थाने से पुलिस की 2 गाड़ियां आईं और अहमदी मस्जिद पर छापेमारी करके इलाके की घेराबंदी कर दी। इसके बाद मीनारों को ढहा दिया गया। उन्होंने सीमेंट का इस्तेमाल करते हुए वहां लिखे शब्दों को भी मिटा दिया।' महमूद ने बताया कि यह मस्जिद 1984 के आसपास बनी थी और 40 साल पुरानी थी। लाहौर हाई कोर्ट के जस्टिस तारिक सलीम शेख ने पिछले साल अपने फैसले में यह साफ कर दिया था कि 1984 से पहले बनी अहमदी मस्जिदों की संरचनाओं में किसी तरह की छेड़छाड़ की जरूरत नहीं है। पुलिस के एक अधिकारी ने इस बारे में बताते हुए कहा, 'हमें देपालपुर में अहमदिया मस्जिद की मीनारों के खिलाफ शिकायत मिली थी। हमने स्थानीय अहमदिया लोगों को बुलाया और उनसे मीनारों को गिराने के लिए कहा क्योंकि वे मुस्लिम मस्जिदों की तरह दिखती थीं। उनके इनकार करने पर पुलिस ने उन्हें गिरा दिया।' महमूद ने बताया कि पिछले साल पाकिस्तान में अहमदिया लोगों की कम से कम 42 मस्जिदों पर हमला हुआ था।

नमो नमो भारत

समर्पित हो कर देश सेवा में,भारत माता के वीर पुत्र ये,नरेंद्र मोदी जी जिनका नाम।महाशक्ति यह देश बने ये,ऐसे रहे है इनके सारे काम ।।भारत माता का हृदय भी,गौरवान्वित महसूस करता है ।जय भारत जय भारती संग नमो नमो भारत का नारा जब धारा प्रवाह से लगता है।।सशक्त,सक्षम भारत का रूप विश्व को जिन्होंने दिखलाया ।नही डर का है काम यहां कोई,नए भारत की नए विचार से अपने सब संभव करके दिखाया ।।भारत का मान जिन्होंने बढ़ाया है,आज सफल मनोरथ पूर्ण हो इनके।प्रिय

भक्तगणों ने गणेश विसर्जन पर श्री गणेश जी की भक्ति भाव से की विदाई

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । गणेश चतुर्थी पर विध्नहर्ता श्री गणेश जी को भक्तगणों द्वारा जिले भर में घर-घर में एवं छोटे-बड़े पंडाल लगाकर श्री गणेश जी की प्रतिमाओं को बड़े भक्ति भाव से बैठाया गया । भक्तों द्वारा प्रतिदिन श्री गणेश जी की स्तुति,वंदना,आरती के बाद प्रसाद का वितरण भी किया जाता रहा।गणेश विसर्जन पर श्री गणेश जी को अलग - अलग नियत स्थानों पर भक्तगणों द्वारा बड़े भक्ति भाव से विसर्जन किया गया। भक्तों ने श्री गणेश जी से सम्पूर्ण भारत बर्ष में अमन शांति के लिए प्रार्थना की,और श्री गणेश जी से विनती करते हुए कहा कि गणपति बप्पा मोरिया अगले बर्ष तू जल्दी आ----

-श्री गणेश विसर्जन के बाद भक्तों द्वारा जगह - जगह भंडारे खिलाए गए ।गणेश विसर्जन के समय जितेंद्र सिंह यादव उर्फ छोटे,अमृत सिंह भदौरिया, हर्ष सिंह भदौरिया, रजनीश सिंह भदौरिया,जय सोनी,आयुष सिंह यादव,वेदांशु त्रिपाठी उर्फ यशबाबू सहित हजारों भक्त उपस्थित रहे ।

मकान पाकर गदगद हुए हितग्राही।

प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना के अंतर्गत आज प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम भोपाल के तारतम्य में नगर पालिका पोरसा के द्वारा भी पांच हितग्राहियों को मकान का गृह प्रवेश व खुशियों की चाबी सौंपी गई।

पोरसा । प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी)के अंतर्गत आज प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम कुशाभाऊ ठाकरे कान्क्लेव सेंटर भोपाल में रखा गया उसी के तारतम्य में पोरसा नगर पालिका द्वारा भी पांच हितग्राहियों को आवास का लाभ मिला जिसमें आवास पूजन के साथ गृह प्रवेश का फीटा काट कर नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती कुसुम देवी रामवीर सिंह तोमर ने गृह प्रवेश कराया वह उन्होंने प्रधानमंत्री द्वारा किए गए पहल की सराहना की इस मौके पर नगर पालिका अध्यक्षा श्रीमती कुसुमा देवी रामवीर सिंह तोमर,सीएमओ अवधेश सिंह सेंगर अशोक सिंह पूर्व पार्षद ,सबइंजीनियर संजय वर्मा , राघवेन्द्र सिंह जादौन सहा 2 हाकिम त्यागी।, आकाश तोमर व अन्य निकाय कर्मी मौजूद रहे।

आज मौ नगर में श्री श्री 1008 भगवान विश्वकर्मा समाज कमेटी मौ जिला भिंड के द्वारा किया गया विश्वकर्मा पूजन

उप संपादक महेंद्र शर्मा

आज विश्वकर्मा समाज मौ के द्वारा भगवान विश्वकर्मा जी का पूजन दिवस धूमधाम से मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में मौ नगर परिषद अध्यक्ष सज्जन सिंह यादव आज के कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वकर्मा समाज अध्यक्ष लल्लू प्रसाद विश्वकर्मा ने की सज्जन सिंह यादव ने कहा विश्वकर्मा समाज के साथ हम सदा कंधे से कंधा मिलाकर चलेंगे जहां भी विश्वकर्मा समाज को जरूरत पड़ती है तो सज्जन सिंह यादव आपके साथ हमेशा तत्पर तैयार हैं आज इस कार्यक्रम में वरिष्ठ समाजसेवी सरमन विश्वकर्मा, द्वारका प्रसाद विश्वकर्मा, बुद्धे विश्वकर्मा , गंभीर विश्वकर्मा, मुन्ना लाल विश्वकर्मा, तेज सिंह बाबू जी, संतोष विश्वकर्मा जी,प्रेम नारायण विश्वकर्मा , मौ नगर संरक्षक डॉ.गोविंद विश्वकर्मा , उपाध्यक्ष दुर्गाचरण विश्वकर्मा, प्रबंधक चिंतामन विश्वकर्मा, कोषाध्यक्ष कार्तिकेय विश्वकर्मा, सहसचिव रामनिवास विश्वकर्मा, संगठन मंत्री सौरभ विश्वकर्मा,प्रचार मंत्री अग्रसेन विश्वकर्मा, कार्यालय मंत्री अशोक विश्वकर्मा, भोजन मंत्री उमेश विश्वकर्मा, सुरक्षा मंत्री करतार विश्वकर्मा, सह मीडिया हिमांशु विश्वकर्मा, सदस्य संजीव विश्वकर्मा, जितेंद्र विश्वकर्मा, अशोक विश्वकर्मा, विनोद विश्वकर्मा, इंदर विश्वकर्मा, राजकुमार विश्वकर्मा , जवाहर विश्वकर्मा, कल्यान विश्वकर्मा, आदि कई विश्वकर्मा समाज के वरिष्ठ समाज सेवी उपस्थित रहे कार्यक्रम का सुचारू रूप से मंच संचालन डॉ.बेताल सिंह विश्वकर्मा ने किया

धूमधाम से मनाई गई श्री विश्वकर्मा भगवान जयंती,निकाली शोभायात्रा

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

दबोह- मंगलवार को नगर में धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ श्री विश्वकर्मा जयंती मनाई गई।जिस दौरान सामाजिक बन्धुओ ने भव्य शोभायात्रा निकाली।यह शोभायात्रा मंगलवार सुबह 10 बजे मोनी आश्रम से प्रारंभ हुई और मुख्य बाजार होते हुए सुप्रसिद्ध धाम माँ रणकौशला देवी मंदिर प्रांगण विश्वकर्मा मंदिर अमाहा में समापन हुई।इस दौरान विश्वकर्मा बंधुओ ने बताया कि श्री विश्वकर्मा पूजा पूरे भारत में उत्साह के साथ मनाई जाती है भगवान विश्वकर्मा को सृजन और वास्तुकला का देवता माना गया है,इस दिन भक्त अपने-अपने क्षेत्र में प्रगति और समृद्धि के लिए विश्वकर्मा जी की आराधना करते हैं और उनका आशीर्वाद मांगते हैं।वहीं इस उपलक्ष्य में निकली भव्य शोभा यात्रा में विशाल बाइक रैली भी निकाली गई जिसमें समाज के समस्त बन्धु मौजूद रहे।वहीं कार्यक्रम स्थल पर विश्वकर्मा समाज के युवा,बुजुर्ग व वरिष्ठजनों की बैठक भी हुई जिसमें समाज को आगे बड़ाने और समाज को विकसित करने व युवा वर्ग को आगे बड़ाने की बात पर चर्चा हुई।

धूम धाम से हुआ विघ्नहर्ता गणपति बप्पा का विसर्जन

प्राचीन करधेन तालाब में हुआ बप्पा का विसर्जन

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

दबोह-गणेश महोत्सव के चलते हर्ष वर्ष की भांति इस वर्ष भी नगर दबोह में कई जगह विघ्नहर्ता गणपति बप्पा विराजमान रहे। गणपति महोत्सव के चलते नगर में विराजमान बप्पा की पूजा अर्चना काफी धूम से हुई और नगर के लोगो ने इस उत्सव का भी भरपूर आनंद लिया। मंगलवार को सुबह 11 बजे से ही अगले बरस तूं जल्दी आ के गानों के साथ गणपति विराजमान बप्पा होकर जिले के दूसरे बड़े तालाब में से एक नगर दबोह में स्तिथ करधेन तालाब पहुंचे। जहां पर विधिविधान से गणपति बप्पा की पूजा अर्चना कर जयकारों के साथ भक्तो ने उन्हें नदी के पानी में विसर्जित किया।आपको बता दें कि नगर दबोह में लगभग आधा दर्जन से अधिक गणपति बप्पा की प्रतिमाएं स्थापित की गई थी।

लहार नगर से भिण्ड जिला कलेक्ट्रेट तक लगाई दौड़

नशे के विरुद्ध व लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के लिए लगाई 55 किमी की अल्ट्रा दौड़ पिता से मिला

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

लहार-नगर लहार के अभिभाषक,सामाजिक कार्यकर्ता एडवोकेट संजीव नायक ने लहार नगर से भिंड कलेक्ट्रेट तक 55 किलोमीटर की बिना रुके एक लय में दौड़ लगाई।सामाजिक कार्यकर्ता व पेशे से एडवोकेट संजीव नायक ने नगर लहार से रात 10-30 बजे शुरू किया दौड़ लगाना।लहार से मिहोना,रौन बायपास,मेहदा से ऊमरी होते हुए सुबह 5.30 बजे सात घण्टे में अपनी दौड़ खत्म की।यह दौड़ लोगों को नशे से दूर रहने व् स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता ड़ैलाने के निमित्त लगाई गई।लहार अनुभाग में गाँव गाँव जाकर नशा के विरोध में जागरूकता के लिये एक सैकड़ा से ज्यादा ग्राम चौपाल लगा चुके हैएडवोकेट संजीव नायक पूर्व से ही गाँव गाँव जाकर ग्राम चौपाल लगाकर लोगों को नशा शराब स्मैक के विरुद्ध लोगों में जागरूकता ड़ैलाने का कार्य कर रहे है।स्वास्थ्य के प्रति सजगता का स्वयं को उदाहरण बना कर समाज के समक्ष खुद को प्रस्तुत किया है ताकि लोग किसी भी उम्र व् समय में नियमित दिनचर्या बना कर खुद को स्वस्थ रख सकते है,नशामुक्त भारत का स्वप्न देख रहे नायक जी ने एक सैकड़ा से ज्यादा ग्राम चौपालों का आयोजन किया जा चुका है,संजीव नायक के पिता रामशंकर शर्मा भी पेशे से बकील है,संजीव नायक का कहना है कि हमारे नशा मुक्ति कार्यक्रम में हमारे प्रेरणा स्त्रोत हमारे पिता हैं,जिन्होंने हमारा हमेशा मनोबल बढाया है,लहार से भिण्ड तक की दौड़ में पिता भी निजी वाहन से साथ मे चले थे।अनेकों शहरों में हाफ व फुल मैराथन दौड़ चुके है नायकतहसील लहार से जिला भिण्ड तक 55 किलोमीटर की अल्ट्रा रन दौड़ के पूर्व भी देश में कई जगह संजीव नायक एडवोकेट ने हाफ एवं फुल मैराथन में दौड़ लगाई है।एडवोकेट संजीव नायक ने दौड़ के बाद लोगों से विनम्र अपील की है कि हम सभी को स्वास्थ्य को लेकर सजग रहने की आवश्यकता है नशे की लत से दूर रहकर नियमित रूप से सुबह अथवा शाम व्यायाम कर अथवा योग कर जीवन को खुशहाल बनाया जा सकता है।नियमित अभ्यास से आप तनाव मुक्त एवं शारीरिक मजबूती पाएंगे,शरीर आपका है इसके प्रति आप यदि वफादार नहीं है,तो आप किसी के साथ वफादार या विश्वसनीय नहीं है,स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग का वास होता है आप अपने दैनिक क्रियाकलापों में बेहतर और रचनात्मक कर सकते है।

लहार से भिण्ड तक जगह जगह हुआ स्वागत-लहार से भिण्ड तक की इस अल्ट्रा दौड़ में जगह जगह स्वागत भी हुआ स्वागत करने वालों में मझले जोशी,रोहित मिश्रा,अंकित जोशी,गौतम भारद्वाज,आशीष भारद्वाज प्रमुख थे।

उक्त दौड़ में जूनियर एड.शौरभ ब्यास ने भी 18 किलोमीटर की दौड़ लगाईलहार से भिंड तक की इस दौड़ में एडवोकेट संजीव नायक का प्रोत्साहन हेतु सहयोगी बने एडवोकेट सौरभ व्यास ने भी मिहोना नगर से मेहदा गाँव मे सिंध नदी के पुल तक दौड़ लगाई,प्रोत्साहन हेतु अन्य लोगों में फीरोज खान,अजय शिवहरे,एडवोकेट मृदुल मिश्रा, एडवोकेट विवेक नायक,एडवोकेट विकास नायक चार पहिया वाहनों से साथ मे चले।

हरिद्वार में श्रीमद भागवत कथा में भगवान ने लिया वामन अवतार

पुष्पांजली टुडे

हरिद्वार। श्रीमद भागवत कथा में भगवान ने लिया अवतार वामन अवतार,कृष्ण जन्म, गोवेर्धन पूजा रुक्मणि विवाह सुदामा चरित्र एवं महायज्ञ के साथ भंडरा का आयोजन किया सभी ने किया भव्य स्वागत एवं लिया आशीर्वाद राजावत परिवार द्वारा आयोजित की जा रही श्रीमद भागवत कथा हरिद्वार नगली बेला आश्रम ऋषिकेश रोड पर किया जा रहा है ! कथा का प्रारंभ सोमबार कों कों श्री गणेश पूजन एबं कलश यात्रा निकल कर किया साथ दिन की कथा में बामन अवतार कृष्ण जन्मदिन रुक्मणि विवाह गोवेर्धन पूजा सुदामा चरित्र साथ सातवे दिन हुआ भव्य समापन कल यज्ञ और भंडारे के साथ होगा कथा का समापन! कथा व्यास पंडित श्रीमान गिरिजा शंकर शर्मा शास्त्री जी द्वारा दर्शया गया! भगवान ने अवतार लिया तो राजावत परिवार एबं सभी भक्तजनों भव्य आयोजन किया एवं शानदार स्वागत कर भगवान से आशीर्वाद लिया कथा का आरंभ प्रतिदिन सुबह की आरती कर किया गया! कथा में प्रतिदिन अथितियों का आगमन हुआ उन्होंने कथा सुन आशीर्वाद लिया सभी राजावत परिवार कों बधाई शुभकामनायें भी दीं !इसी क्रम मे खड़ीयाड़ , खोयला एबं शुहंस से आए नातेदार श्री विशाल सिंह तोमर,रणवीर सिंह तोमर , सत्यपाल सिंह तोमर राम सिंह भदौरिया सुरेश तोमर गंगा सिंह भदौरिया श्री रूप सिंह भदौरिया नरेश सिकरवार राजीव तोमर एब्बम समस्त राजावत परिवार ने व्यास महाराज जी पंडित गिरिजा शंकर शास्त्री जी का स्वागत किया एबं परीक्षित श्री मोहन सिंह कुशवाह एबं उनकी धर्मपत्नी

किया ! साथ कथा में भिंड से आये प्रमुख पेंशनर्स एसोसिएशन के प्रांतीय संगठन सचिव विजय दैपुरिया जी का भव्य स्वागत किया एबं स्मृति चिन्ह भेंट किया !कथा का चौथे दिन का समापन श्रीमद भागवत कथा का प्रतिदिन की आरती कर समापन किया !कथा में सहोगी भक्तगण नातेदार एबं मित्रो ने कथा आनंद लिया एवं कथा कों भव्य बनाया राजवात परिवार ने सभी लोगों का स्वागत भी किया.. हरिद्वार में साथ कथा का सभी ने आनंद किया.

राजवात परिवार द्वारा सभी अथितियों कों स्मृति चिन्न भेंट कर आभार दिया..

संपादकीय

चीन पर कभी यकीन नहीं किया जा सकता

लगातार चार साल से चले आ रहे भारत चीन के बीच तनाव के कम होने के संकेत हैं। भारत और चीन के द्विपक्षीय संबंधों को लेकर हाल में घटनाक्रम बहुत तेजी से घटा है। चीन भारत सीमा से सेना का पीछे हटना बहुत अच्छा है किंतु चीन की बात पर आंख मूंदकर यकीन नहीं किया जा सकता। समझौते करने के बाद अपनी बात से मुकरना उसकी आदत रही है। धोखा देना चीन का चरित्र है। उस पर पूरी तरह से नजर रखनी होगी। उसकी चाल के अनुरूप हमें अपना व्यवहार और तैयारी करना होंगी। भारत चीन सीमा विवाद के सुलझने के संकेत 12 सितम्बर को ही सेंट पीटर्सबर्ग में ब्रिक्स एनएसए लेवल की समिट के साइडलाइन्स पर हुई उस बैठक के दौरान ही दिख गए थे जो एनएसए अजित डोमाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी के बीच हुई थी। भारतीय विदेश मंत्रालय की ओर से बैठक के बाद जारी प्रेस नोट में इस बात का जिक्र था कि दोनों देशों ने बचे हुए क्षेत्रों में भी पूर्ण डिसएंगेजमेंट की दिशा में काम करने को लेकर सहमति जताई है। जानकार मानते हैं कि गतिरोध दूर करने करने की दिशा में ले जाने की प्रक्रिया एकाएक नहीं होती। इसके लिए बैकग्राउंड में काम होता रहता है। ओआरएफ में फेलो और चीन मामलों के जानकार कल्पित मणकिकर कहते हैं कि ऐसा एक लंबी प्रक्रिया के तहत होता है। दोनों देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और दोनों देशों के विदेश मंत्री लगातार मुलाकात करते आ रहे हैं। पिछले चार सालों से बॉर्डर मुद्दों को सुलझाने को लेकर कोशिशें लगातार हो रही है। सेना के कमांडर स्तर पर बातें अलग से होती रही हैं। भारत और चीन दोनों की ओर से इस तरह की कोशिशें की जा रही थी। हालांकि अब जो दिख रहा है, उसके मद्देनजर इस तरह की कोशिशें क्या दिशा लेंगी, इसे लेकर अभी वेट एंड वॉच की स्थिति में ही रहा जा सकता है। बॉर्डर पर आए गतिरोध के मद्देनजर विदेश मंत्रियों और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की बैठकें किए जाने का एक मैकेनिज्म तैयार किया गया है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने पूर्वी लद्दाख में सीमा मुद्दे पर 12 सितम्बर को कहा कि सैनिकों की वापसी से संबंधित मुद्दे लगभग 75 प्रतिशत तक सुलझ गए हैं लेकिन बड़ा मुद्दा सीमा पर बढते सैन्यीकरण का है। जिनेवा में थिंकटैंक के एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि जून 2020 में गलवन घाटी में हुए टकराव ने भारत–चीन संबंधों को समग्र रूप से प्रभावित किया। जयशंकर ने कहा कि विवादित मुद्दों का समाधान ढूंढने के लिए दोनों पक्षों में बातचीत चल रही है। हमने कुछ प्रगति की है। मोटे तौर पर सैनिकों की वापसी संबंधी करीब तीन–चौथाई मुद्दों का हल निकाल लिया गया है। लेकिन इससे भी बड़ा मुद्दा यह है कि हम दोनों ने अपनी सेनाओं को एक–दूसरे के करीब ला दिया है और इस लिहाज से सीमा का सैन्यीकरण हो रहा है। सूत्रों का कहना है कि भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच पूर्वी लद्दाख में कुछ टकराव वाले बिंदुओं पर गतिरोध बना हुआ है। भारत कहता रहा है कि सेना के पूर्व स्थान पर पहुंचे बिना सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति नहीं होगी, चीन के साथ संबंध सामान्य नहीं हो सकते। जयशंकर ने कहा कि 2020 में जो कुछ हुआ, वह कुछ कारणों से कई समझौतों का उल्लंघन था जो अभी भी हमारे लिए पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हैं। चीन ने वास्तविक नियंत्रण रेखा पर बहुत बड़ी संख्या में सैनिकों को तैनात किया और स्वाभाविक रूप से जवाबी तौर पर हमने भी अपने सैनिकों को भेजा। 2020 की झड़प के बाद से दोनों देश सीमा पर बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए भी प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, जिसे वास्तविक नियंत्रण रेखा के रूप में भी जाना जाता है। भारत द्वारा उच्च ऊंचाई वाले हवाई अड्डे तक एक नई सड़क का निर्माण चीनी सैनिकों के साथ 2020 में होने वाली घातक झड़प के मुख्य कारणों में से एक माना जा रहा है। इस बार चीनी सेना के सीमा से पीछे हटने का कारण चीन की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के राजनीतिक ब्यूरो के सदस्य वांग काबयान भी है। उन्होने इस बात पर जोर दिया कि अशांत विश्व का सामना करते हुए, दो प्राचीन पूर्वी सभ्यताओं और उभरते विकासशील देशों के रूप में चीन और भारत को स्वतंत्रता पर दृढ रहना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि एकता और सहयोग का चयन करना चाहिए तथा एक–दूसरे को नुकसान पहुंचाने से बचना चाहिए। वांग ने उम्मीद जताई कि दोनों पक्ष व्यावहारिक दृष्टिकोण के जरिए अपने मतभेदों को उचित ढंग से हल करेंगे और एक–दूसरे के साथ मिलकर काम करने का उचित तरीका ढूंढेंगे। चीन–भारत संबंधों को स्वस्थ, स्थिर और सतत विकास के रास्ते पर वापस लाएंगे। इतना सब हो रहा है पर जरूरी यह है कि दोनों का मई 2020 की यथास्थिति पर वापस लौटना ही समाधान है। निश्चित रूप से पीछे हटना समाधान नहीं है। यदि निश्चित रूप से समाधान के रास्ते पर चले तो भारत नुकसान में ही रहेगा। इन सब को देखकर भारत को चलना होगा। मई 2020 की स्थिति पर चीन सहमत होगा, ऐसा नही लगता। सीमा विवाद के चार साल के दौरान समाचार आए की चीन सीमा पर नए हवाई अड्डे सैनिक छावनी उनके लिए बंकर बना रहा है। अपने सीमा से सटे क्षेत्र में गांव विकसित कर रहा है। भारतीय क्षेत्र के स्थानों क नाम बदल रहा है। हांलाकि विवाद की अवधि में भारत ने भी सीमा पर सुरक्षा ढांचा विकसित किया है। नए एयरबेस तैयार कर रहा है। ठंडे स्थानों में रहने के लिए सैनिकों को प्रशिक्षित करने के साथ ही उनके लिए बर्फ के दौरान भी रहने के लिए सोलर से गर्म करने वाले उनके टैंट बना रहा है। इस प्रक्रिया को भारत का और तेज करना होगा। सीमा रेखा के सटाकर गांव विकसित करने होंगे तोकि चीन की गतिविधि पर नजर रखी जा सके। एक तरह से चीन की प्रत्येक कार्रवाई का उत्तर उसके कदम ही से आगे बढकर देना होगा। एक बात और चीन कभी का काबू में आ गया होगा, काश हम भारतीय सही अर्थ में देशभक्त होते। मई 2020 में चीन से विवाद होने पर भारतीयों की फेसबुक पर बड़ी देशभक्ति दिखाई दी। लगाकि अब भारत में चीन का बना सामान नही आएगा। दीपावली पर व्यापारियों के आंकड़े भी आए कि चीन से बना कोई सामान नही मंगाया गया। जबकि आंकड़े इसके विपरीत हैं। आर्थिक शोध संस्थान ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) के अनुसार वित्त वर्ष 2023–24 में भारत और चीन के बीच कुल 118.4 अरब डॉलर का व्यापार हुआ। वहीं, अमेरिका के साथ द्विपक्षीय व्यापार 118.3 अरब डॉलर रहा। 2021–22 और 2022–23 में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार अमेरिका रहा था। अब चीन है। अमेरिका से हम अस्त्र शस्त्र जैसे महंगे सामान लेते हैं। इसलिए वहां से आयात जयादा होना चाहिए था। चीन जानता है कि भारतीय और भारतीय व्यापारी सस्ते के लालच में उसका ही माल खरीदेंगे। इसलिए वह हठ्धर्मी पर है, यदि चीन का आयात दस प्रतिशत भी घट गया होता तो चीन कभी का भारत के आगे झुककर समझौता करने को मजबूर हो जाता।

क्या न्यायाधीश चंद्रचूड होंगे अगले लोकपाल

प्रेम शर्मा

लोकपाल में एक अध्यक्ष और अधिकतम आठ सदस्य होते हैं। इनमें से कम से कम आधे सदस्य, सुप्रीम कोर्ट के वर्तमान या पूर्व न्यायाधीश या उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश होते हैं।

देर से ही सही, लोकपाल के जांच प्रकोष्ठ के गठन से लोगों में भ्रष्टाचार निवारण की दिशा में उल्लेखनीय नतीजों की उम्मीद जगी है। लोकसेवकों में गलत तरीके से पैसा कमाने की भूख और रिश्वत लेकर अपात्र लोगों को लाभ पहुंचाने, सरकारी योजनाओं में गतिरोध और हानि पैदा करने की प्रवृत्ति किसी से छिपी नहीं है। इस वातावरण को तभी ठीक किया जा सकता है। जब लोकसेवकों की अनियमितताओं पर लगाम लगाई जा सके। न्यायमूर्ति पिनाकी चंद्र घोष ने दो साल का कार्यकाल पूरा करने के बाद मई 2022 में सेवानिवृत्त हो गए। हालॉकि इनके कार्यकाल में कोई विशेष उपलब्धि हासिल नही हो पाई। तब से लेकर अब तक लोकपाल का पद रिक्त है। एक बार फिर लोकपाल नियुक्ति को लेकर हलचल तेज हुई है। हालांकि कुछ लोग यह संशय व्यक्त करते रहे हैं कि लोकपाल और लोकायुक्त की नियुक्ति में भी राजनीतिक दखल होती है, इसलिए वे कितने निष्पक्ष रह पाएंगे। कहना मुश्किल है। मगर एक विशाल जनसमुदाय और बड़े प्रतिबद्ध प्रबुद्ध समाज की इच्छा से गठित इस संस्था से भ्रष्टाचार निवारण को लेकर निष्ठा और निष्पक्षता की उम्मीद फिलहाल कमजोर नहीं हुई है। लोगों का कहना है कि अगर चुनाव आयोग के तत्कालीन मुख्य निर्वाचन आयुक्त टी.एन. शेषन की तरह या फिर डॉ. धनंजय वाई चंद्रचूड़ को लोकपाल नियुक्त किया जाता है तो देश की में फैले प्रशासनिक भ्रष्टाचार पर काफी हद तक लगाम लग सकती है। हालॉकि गत दिवस प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा श्रीगणेश उत्सव के दौरान भारत के मुख्य न्यायाधीश धनंजय वाई चंद्रचूड़ के घर की पूजा को लेकर इस बॉत के कायस लगाए जा रहे है कि उनकी दो साल की लम्बी सेवा के उपरान्त 10 नवम्बर 2024 को सेवानिवृत्ति के बाद मोदी सरकार कोई अहम ओहदा दे सकती है। वैसे भी यह सभी जानते है कि व्यक्तिगत रूप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अहम पदों पर नियुक्ति को लेकर चौकाने वाले नाम लेकर सामने आते है। ऐसे में इस बॉत में कोई संशय नही कि लगातार सरकार को उसकी कामियॉ दिखाने वाले मुख्य न्यायाधीश धनंजय वाई चंद्रचूड़ ही अगले लोकपाल के रूप में दिखाई पडें। भ्रष्टाचार पूरी दुनिया के सामने विकास और खुशहाली में बाधा है। दुनिया के हर देश ने इस पर अंकुश लगाने का तंत्र विकसित कर रखा है। हर देश में अपने अपने तरीके, कानून के माध्यम से प्रशासन की जवाबदेही तय करने की कोशिशें की जाती हैं। मगर हमारे यहां इस मामले में ज्यादातर नाकामी ही नजर आती है। इसलिए लंबे समय से मांग की जाती रही कि लोकपाल और लोकायुक्त के गठन संबंधी कानून बनना चाहिए। करीब बारह वर्ष पहले इसे लेकर बड़ा आंदोलन हुआ, जिसके दबाव में लोकपाल अधिनियम पारित हुआ। लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम के तहत, केंद्र में लोकपाल और हर राज्य में लोकायुक्त की नियुक्ति की जाती है। लोकपाल और लोकायुक्त, सार्वजनिक पदाधिकारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच करते हैं। लोकपाल में एक अध्यक्ष और अधिकतम आठ सदस्य होते हैं। इनमें से कम से कम आधे सदस्य, सुप्रीम कोर्ट के वर्तमान या पूर्व न्यायाधीश या उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीश होते हैं। विदेश में लोकपाल जैसी संस्था काफी साल पहले से है। लेकिन भारत में इसका प्रवेश साल 1967 में हुआ। उस वक्त पहली बार भारतीय प्रशासनिक सुधार आयोग ने भ्रष्टाचार संबंधी शिकायतों को लेकर लोकपाल संस्था की स्थापना का विचार रखा था। हालांकि इसे स्वीकार नही किया गया। इस बिल को लेकर समाजसेवी अन्ना हजारे ने एक अनशन किया और वो एक बड़ी लड़ाई में तब्दील हो गई. उसके बाद लोकसभा ने 27 दिसंबर, 2011 को लोकपाल विधेयक पास किया गया। फिर 23 नवंबर 2012 को प्रवर समिति को भेजने का फैसला किया। लोकपाल और लोकायुक्त अधिनियम, 2013 को संसद ने साल 2014 में पारित किया था और राष्ट्रपति ने इसे 1 जनवरी, 2014 को मंजूरी दी थी। काफी जद्दोजहद के बाद भारत के पहले लोकपाल न्यायमूर्ति पिनाकी चंद्र घोष बने थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भारत के मुख्य न्यायाधीश रंजन गोगोई, और लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने 23 मार्च, 2019 को उन्हें भारत का पहला लोकपाल नियुक्त किया था।लोकपाल की नियुक्ति का मामला करीब पांच वर्ष तक इस तर्क के आधार पर टलता रहा कि लोकसभा में कोई विपक्ष का नेता नहीं था। लोकपाल अध्यक्ष की नियुक्ति में विपक्ष के नेता का होना जरूरी है। आखिरकार पांच वर्ष पहले लोकपाल का गठन हुआ। मगर अभी तक वह पूरी तरह कार्य करने की स्थिति में नहीं आ सका है। अब लोकपाल के जांच प्रकोष्ठ का गठन किया गया है। इस प्रकोष्ठ में लोकपाल अध्यक्ष के अधीन एक जांच निदेशक होगा, जिसे तीन पुलिस अधीक्षक मदद करेंगे। प्रत्येक पुलिस अधीक्षक को जांच अधिकारी और अन्य कर्मचारियों की सहायता प्रदान की जाएगी। इस तरह उम्मीद बनी है कि अब लोकसेवकों की अनियमितताओं के खिलाफ कुछ कड़े कदम उठाए जा सकेंगे। हालांकि भ्रष्टाचार निवारण कानून के तहत पहले से कई जांच एजंसियां काम करती हैं। हर महकमे के कर्मचारी पर वहां का सतर्कता विभाग नजर रखता और उसके खिलाफ शिकायतों का निपटारा करता है। केंद्रीय जांच ब्यूरो, प्रवर्तन निदेशालय, आयकर विभाग भी संबंधित मामलों में जांच करते ही हैं। लेकिन इन एजेसिंयो पर लगातार उगली उठती रही है। इन एजंसियों को सरकार के इशारे पर काम करने का आदी बताया जाता है। इन पर सत्तारूढ़ दल के दबाव में काम करने की प्रवृत्ति बताई जाती रही है। मगर प्रशासनिक सुधार आयोग का मानना था कि लोकपाल और लोकायुक्त के गठन से लोकसेवकों के खिलाफ निष्पक्ष कार्रवाई हो सकेगी। दूसरी जांच एजंसियों पर चूंकि राजनीतिक प्रभाव अधिक देखा गया है, इसलिए उनसे भ्रष्टाचार के मामले में निष्पक्षता की उम्मीद धुंधली बनी रहेगी। पर शायद सरकारों को लोकपाल और लोकायुक्त के गठन से इसीलिए हिचक पैदा होती रही कि उसके दायरे में प्रधानमंत्री तक को रखा गया है। फिर, लोकपाल और लोकायुक्त स्वतंत्र निकाय की तरह काम करेंगे, उन्हें दूसरी एजंसियों की तरह किसी अधिकारी के खिलाफ जांच करने के लिए संबंधित विभाग से अनुमति की जरूरत नहीं होगी। कई सरकारों को लगता रहा है कि इस तरह उनके कामकाज में बाधा पड़ सकती है। शायद यही कारण है कि अब भी कई राज्य सरकारों ने अपने यहां लोकायुक्त का गठन नहीं किया है।

आर्थिक तंत्र पर बोझ बनती प्राकृतिक विपदाएं

आपदा सदैव अनअपेक्षित घटना होती है। जो मानवीय नियंत्रण से सदैव से बाहर होती है। प्राकृतिक आपदा अल्प समय में बिना किसी पूर्व सूचना के घटित होती है, जिससे मानव जीवन के सारे क्रियाकलाप अवरुद्ध हो कर,जान और माल की बड़ी हानि होती है । आर्थिक तंत्र,विकास नष्ट हो जाते हैं। आपदा की विद्रूपता, भयानक स्वरूप एवं निरंतरता मानव जीवन और समाज और देश को बड़ी हानि पहुंचाकर उस देश की आर्थिक स्थिति में गहरी चोट करते हैं राष्ट्र को आर्थिक रूप से बहुत पीछे खींच कर ले जातें हैं। आपदा प्रबंधन में जापान से सीख ली जा सकती है। क्योंकि जापान आपदा प्रबंधन में विश्व में अग्रणी देश माना जाता है। जापान पृथ्वी के ऐसे क्षेत्र में अवस्थित है, जहां भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक आपदाएं सदैव आती रहती हैं। जापान में आपदा प्रबंधन की अत्याधुनिक तकनीक को याकोहामा रणनीति कहा जाता है। जापान में आपदा प्रबंधन की साल भर नियमित रूप से मॉनिटरिंग कर एक्सरसाइज की जाती रहती है, एवं आपदाओं पर निरंतर निगरानी तथा नजर रखी जाती है,एवं इसके निदान के लिए पूर्व से ही सुनियोजित योजना बनाकर नागरिकों को सुरक्षित कर लिया जाता है। भारत को भी इसी तरह आपदा प्रबंधन को अपनाकर अन्य आपदाओं के साथ सतर्क होकर कार्रवाई की जानी चाहिए। आपदाओं के प्रति मानवीय सभ्यता के संदर्भ में समाज के आर्थिक सामाजिक रूप से कमजोर वर्ग को ज्यादा प्रभावित करती है एवं समाज का सबसे संवेदनशील तबका यानी वृद्ध व्यक्ति, महिलाएं, बच्चों, दिव्यांग लोगों को प्राकृतिक आपदाओं से सबसे ज्यादा खतरा बना रहता है। आपदा के समय सबसे ज्यादा निम्न आय वर्ग के व्यक्ति तथा मजदूर तबके के व्यक्ति प्रभावित होतें हैं उनकी दिनचर्या सामूहिक रूप से छिन्न–भिन्न हो जाती है आर्थिक साधन भी नष्ट हो जाते हैं, जिससे उसे आजीविका की एक बडी विडंबना सताने लगती है। भारत के भू भाग का लगभग 58: क्षेत्र भूकंप की संभावना वाला क्षेत्र है, जिसमें हिमालयिन क्षेत्र,पूर्वोत्तर राज्य, गुजरात का कुछ क्षेत्र, अंडमान निकोबार द्वीप समूह भूकंप की दृष्टि से सबसे सक्रीय क्षेत्र रहें है। देश के 65 से 68: भूमाग पर कभी कम कभी ज्यादा भीषण रूप से सूखा पड़ता है, इसी तरह भारत के पश्चिमी और प्रायद्वीपीय राज्य में मुख्यत: शुष्क तथा अर्ध शुष्क न्यून नमी वाले क्षेत्र सूखे से सदैव प्रभावित रहते हैं। बाढ़ से प्रभावित भूमि का विस्तार क्षेत्र देश के 12: है, यानी 7 करोड़ हेक्टेयर जमीन में भूकंप आने की संभावना सदैव बनी रहती है। हिमालय क्षेत्र देश के पर्वतीय क्षेत्र में भूस्खलन की गंभीर समस्या की संभावना सदैव बनी रहती है। देश के विशाल तटवर्ती क्षेत्र में चक्रवात तथा सुनामी की भयावह स्थिति की संभावना रहती है।भारत नें विश्व के साथ–साथ करोना संक्रमण की भयानक महामारी से प्रभावित होकर हजारों लाखों नागरिकों की जान गवा कर इस आपदा से जंग लडी है, यह कोविड–19 की महामारी या आपदा प्राकृतिक है या मानव निर्मित यह तो भविष्य ही बताएगा, किंतु इस महामारी ने पूरे वैश्विक स्तर पर आकस्मिक रूप से मानव जीवन में मृत्यु का तांडव मचा के रख दिया था। ऐसी ही अनपेक्षित आपदाओं का पूर्वानुमान अथवा आकलन किया जाना पहले से संभव नहीं हो सकता है। ऐसे में राष्ट्रीय अन्य योजनाओं के साथ–साथ आपदा प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषय पर अत्यधिक सावधानी पूर्वक योजना तथा विभाग बनाने चाहिए, देश में जापान जैसे देश की तरह आपदा प्रबंधन से निपटने के लिए अत्याधुनिक आपदा प्रबंधन सिस्टम को तैनात कर तैयार रखने की आवश्यकता होगी। भारत को आपदा प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विभाग को चुस्त–दुरुस्त तथा अत्याधुनिक तकनीक से युक्त रखने की आवश्यकता है। तूफानी चक्रवात,सुनामी,भूस्खलन, भूकंप, सूखा बाढ़ के अलावा अब कोविड–19 यानी करोना संक्रमण जैसी खतरनाक बीमारियां भारत देश को अपना निशाना बना कर रखा है ।ऐसे में भारत में मध्यम दर्जे का या निम्न दर्जे का आपदा प्रबंधन सिस्टम किसी भी काम का ना रहेगा, एवं इससे भारी जानमाल की हानि होने की संभावना सदैव बनी रहेगी। भारत में आपदा प्रबंधन के लिए 1990 में कृषि मंत्रालय के अंतर्गत डिजास्टर मैनेजमेंट सेल स्थापित किया गया था। लेकिन 1993 में लातूर के भूकंप तथा 1998 में मालपा के भूस्खलन तथा 1999 में ओडिशा में सुपर साइक्लोन तथा 2001 में भुज के भूकंप के बाद देश में एक मजबूत आपदा प्रबंधन की व्यवस्था की जरूरत को महसूस करते हुए जे,सी, पंत जी की अध्यक्षता में हाई पावर कमेटी की रिपोर्ट में एक सुव्यवस्थित तथा व्यापक सिस्टम तथा विभाग की स्थापना की आवश्यकता प्रतिवेदित की गई थी। 2002 में आपदा को देश की आंतरिक सुरक्षा का मामला मानते हुए आपदा को गृह मंत्रालय के अंतर्गत समाविष्ट किया गया। आपदा प्रबंधन के इतिहास में 2005 में एक बड़ा परिवर्तन लाया गया भारत सरकार ने आपदा को अपनी कार्ययोजना के एक चक्रीय क्रम के रूप में प्रबंधित किया, जिसमें आपदा आ जाने के बाद इसके बचाव, नुकसान की भरपाई, निदान तथा आपदा आने के पूर्व की तैयारी तथा योजना को मूर्त रूप देने का एक सुनियोजित तरीका तैयार किया गया था। आपदा से खतरे का स्तर सभी इंसानों के लिए सदैव एक जैसा होता है। किंतु समाज के विभिन्न वर्गों में खतरे से निपटने तथा जूझने की क्षमता अलग–अलग होती है। निम्न वर्ग का तबका अन्य लोगों की अपेक्षा आपदा से ज्यादा प्रभावित होता है। अत: सरकार को गरीब तथा वंचित वर्ग के तबके के लिए आपदा प्रबंधन में विशेष प्रावधान दिया जाना चाहिए। आपदाओं के प्रबंधन एवं अनुसंधान व त्वरित कार्रवाई के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान तथा राष्ट्रीय आपदा कार्रवाई बल का गठन किया गया है। यह आपदा राशि कार्रवाई बल पर किसी खतरनाक आपदा की स्थिति में रासायनिक, जैविक, परमाणु विकिरण तथा अन्य प्राकृतिक एवं मानव निर्मित आपदा के संबंध में विशिष्ट कार्यवाही के निर्वहन का उत्तरदायित्व है। ईस संस्था ने बंगाल तथा उड़ीसा के तटीय क्षेत्र में आई सुनामी में काफी बड़ी संख्या में लोगों की जान भी बचाई है। चक्रवाती तूफान से निपटने में हमारे समुचित प्रयासों ने यह सिद्ध कर दिया है कि हाल के वर्षों में आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है। परंतु पिछले 3 वर्षों से करोना संक्रमण से हुई बड़ी संख्या में मृत्यु ने देश को हिला कर रख दिया था।अगर आपदा प्रबंधन सिस्टम को लगातार मॉनिटर किया जाता एवं उस सिस्टम के अधिकारी जिम्मेदार व्यक्ति सचेत एवं सजग रहते, तो द्वितीय लहर में इस तरह हड़कंप संक्रमण एवं मृत्यु का सामना नहीं करना पड़ता। भारत को आपदा प्रबंधन के सिस्टम पर फिर से आंकलन कर एक नई व्यूह रचना बनाकर गरीब तबके निचले व्यक्ति तथा समग्र रूप से मानव जाति की सुरक्षा के लिए नए–नए उपाय करने चाहिए क्योंकि आपदा कभी बताकर नहीं आती है।

अंधविश्वास, धार्मिक जुनून के मनोवैज्ञानिक समाधान की दरकार

संजीव ठाकुर

अशिक्षा और अज्ञानता अंधविश्वास तथा धार्मिक कट्टरता के पीछे गहरा मनोवैज्ञानिक मानवीय पहलू छुपा हुआ है। इसका समाधान सर्वप्रथम हमें खोजना होगा,यह सामाजिक तौर पर भी बड़ी समस्या है। यदि कम पढा लिखा आदमी धार्मिक अंधविश्वास को मानता है तो यह बात समझ में आती है किंतु इस वैज्ञानिक युग में अत्यंत शिक्षित एवं पढ़े–लिखे लोग भी अंधविश्वास तथा धार्मिक कट्टरता के पीछे भागने लगे तो यह समाज और देश के लिए दुर्भाग्य की बात हैस यह तो तय है की शिक्षा, ज्ञान अज्ञानता के अंधकार को मिटाकर के विवेकपूर्ण विचारों को सोचने की शक्ति प्रदान करता है और इसके पश्चात ही मनुष्य वैज्ञानिक आधार पर तर्क रखकर अपनी बात को मानना शुरू करता है। पूर्व में हम मानते थे कि पृथ्वी चपटी है किंतु वैज्ञानिक प्रयोगों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार यह सिद्ध हो गया कि पृथ्वी गोल है अब लोगों ने लॉजिक और वैज्ञानिक प्रमाण के आधार पर यह मान लिया है की पृथ्वी गोल ही है। शहीद भगत सिंह ने आजादी के लिए एक संगठन नौजवान भारत सभा का गठन किया और उसके घोषणा पत्र में कहा था कि धार्मिक अंधविश्वास और कट्टरता हमारी प्रगति के बहुत बड़े बाधक है, वह हमारे रास्ते की बाधा साबित हुए हैं उनसे हमें हर हाल में छुटकारा पा लेना चाहिए जोकि आजाद विचारों को बर्दाश्त नहीं कर सकती उसे समाप्त हो जाना चाहिए इसी प्रकार अन्य बहुत सारी कमजोरियां भी हैं जिन पर हमें विजय प्राप्त करना होगा ,इस कार्य के लिए सभी समुदाय के क्रांतिकारी उत्साह रखने वाले नई सोच के नौजवानों की आवश्यकता हैस उन्होंने बिल्कुल सही कहा था क्योंकि युवा शक्ति ही देश में नए विचारों की क्रांति ला सकती और अंधविश्वास को समूल नष्ट करने में इनकी ऊर्जा इस कार्य के लिए लगाई जा सकती है,पर दूसरी तरफ शिक्षा का प्रचार प्रसार होना भी नितांत आवश्यक हैस शिक्षा ही ऐसा मूल मंत्र है जिससे अंधविश्वास एवं आडंबर की पोल खोली जा सकती शिक्षा से हमारा तात्पर्य विज्ञान से भी है विज्ञान ने अनेक अंधविश्वास को जन सूचियों में अविश्वास के रूप में में स्थापित किया है और शिक्षा तथा विज्ञान तकनीकी ऐसे मार्ग हैं जिन से चलकर हम न सिर्फ चांद पर पहुंचे हैं बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से पूरी दुनिया एक परिवार की तरह एक दूसरे के एकदम करीब आ चुकी है ऐसे में अंधविश्वास, धार्मिक कट्टरता एवं संप्रदायवाद की जगह कहाँ बच जाती है भला ? शिक्षा का स्तर ईतना ऊंचा हो जाना चाहिए की इन अंधविश्वासी बातों और मिथकों का अस्तित्व ही मूल रूप से विस्मृत किया जाना चाहिएस बिल्ली के रास्ता काटने से काम रुक जाता है,किसी की छींक देने से अशुभ संकेत स्थापित होने लगते हैं यदि कौवा बोलता है तो मेहमान आने का संकेत माना जाना इन सब बातों की कोई तार्किक अथवा वैज्ञानिक पृष्ठभूमि नहीं है और जनमानस द्वारा अपने दिमाग का प्रयोग कर ऐसी अतार्किक और वैज्ञानिक बातों में विश्वास करना भी अंधविश्वास को सामाजिक स्तर पर मान्यता प्रदान करता है। यह भी अशिक्षा का एक बहुत बडा परिणाम है। शिक्षा विज्ञान तथा तकनीकी ज्ञान समाज में तर्कसंगत बातों का विश्वास करने पर भरोसा दिलाता है और धीरे धीरे अंधविश्वास तथा धार्मिक कट्टरता से मनुष्य को परे ले जाता है। मूलत: अंधविश्वास को दूर करने के लिए हमें शिक्षा जैसे अस्त्र का इस्तेमाल तीव्र गति से किया जाना चाहिए। अंधविश्वास, तंत्र मंत्र के अधीन होकर पशुओं की बलि देना भी एक प्रकार से अंधविश्वास को बढ़ावा देना ही है, तंत्र मंत्र के विश्वास में आकर मानव न केवल पशुओं की बलि देते बल्कि बच्चों की बलि देने से भी नहीं परहेज करता है। समाज में व्याप्त अंधविश्वास तथा कट्टरपंथ का लाभ समाज के कुछ चालबाज तथा धोखेबाज लोग उठाते हैं और यही लोग इन अंधविश्वासी लोगों को भूत, प्रेत ,राहु केतु,काल सर्प दोष इत्यादि का भय दिखाकर पूजा पाठ तंत्र मंत्र के नाम से हजारों रुपए लूट लेते हैं। यह सिर्फ गांव में ही नहीं हो रहा है यह शहरों में भी बुरी तरह व्याप्त है तंत्र मंत्र तथा भूत प्रेत से छुटकारा भारत के कस्बों तथा गांव में एक व्यवसाय के रूप में विकसित हो गया है जो देश के लिए एक बड़ी विसंगति और विडंबना है।

अखिल भारतीय साहित्य परिषद ने मनाया हिंदी दिवस

जिसका सूरज कभी न डूबे, हिन्दी ऐसी ऊषा है

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा। हिंदी पखवाड़े के अवसर पर दिनांक 16 सितंबर 2024 सोमवार को अखिल भारतीय साहित्य परिषद एवं बघेली सेवा मंच के तत्वधान में अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय स्टेडियम के सभाकक्ष में हिन्दी भाषा के विविध पक्षों पर संगोष्ठी एवं काव्य संध्या का आयोजन किया गया।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. एन.पी. पाठक (पूर्व कुलपति अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा) एवं मुख्य वक्ता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. चंद्रिका प्रसाद चंद्र रहे।कार्यक्रम की अध्यक्षता अखिल भारतीय साहित्य परिषद महाकौशल प्रांत के महामंत्री श्री चंद्रकांत तिवारी ने की।आयोजन में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ.चंद्र ने हिन्दी भाषा के उद्भव एवं विकास की यात्रा की चर्चा करते हुए हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिये का पक्ष रखा।उन्होने कहा कि हिन्दी भाषा अपनी बोलियों के सामर्थ्य से समृद्ध है एवं हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने में राजनीतिक दृढ़ इच्छाशक्ति की कमी मुख्य बाधा है।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अपना उद्गार व्यक्त करते हुए डॉ.एन.पी. पाठक ने कहा कि आज के बाजारवाद के युग में हिन्दी वैश्विक स्तर पर काफी तेजी से अपना स्थान बना रही है। कोई भी वैश्विक कंपनी या संस्था बिना हिन्दी के अपने को बाजार में सुरक्षित नहीं रख पाएगी।उन्होने कहा कि आज हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे बड़ी संख्या में बोली जाने वाली भाषा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हैं श्री चंद्रकांत तिवारी ने अखिल भारतीय साहित्य परिषद के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए कहा कि साहित्य वह है जिससे समाज का हित हो, समाज को बांटने वाला लेखन साहित्य नहीं कहा जा सकता है।उन्होने बताया कि अखिल भारतीय साहित्य परिषद इस वर्ष स्थानीय बोलियों के संरक्षण एवं संवर्द्धन के अभियान के साथ सतत् रूप से कार्य कर रहा है। इसी परिपेक्ष्य में बघेली भाषा को लेकर हमारा संगठन लेखन एवं प्रकाशन को लेकर आगामी योजनाएं बना रहा है।कार्यक्रम के प्रथम सत्र का संचालन शिवानंद तिवारी (जिलाध्यक्ष, अखिल भारतीय साहित्य परिषद जिला-रीवा)ने किया। इस अवसर पर अखिल भारतीय साहित्य परिषद द्वारा आणंद गुजरात में आयोजित हुए राष्ट्रीय महिला साहित्यकार सम्मेलन में सहभागिता करने वाली दो कवयित्रियों श्रीमती सीमारानी झा एवं डॉ.अरुणा पाठक को उपस्थित अतिथियों एवं अखिल भारतीय साहित्य परिषद जिला महामंत्री डॉ रंजना मिश्रा द्वारा शाल श्रीफल से सम्मानित भी किया गया।

संगोष्ठी के उपरांत एक शानदार काव्य संध्या का आयोजन किया गया,जिसमें नगर के नवोदित एवं वरिष्ठ साहित्यकारों ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया।काव्य पाठ का श्रीगणेश डॉ राजकुमार शर्मा द्वारा की गई मां शारदे की वंदना से हुआ। इसके बाद कवयित्री सीमारानी झा ने काव्य पाठ किया पंक्तियां दृष्टव्य है-÷सब कुछ अच्छा तो नहीं मगर,पहले से पर कुछ अच्छा है,कोई वादा वो करता नहीं मगर, वादा तोड़ने से ये अच्छा है।÷ डॉ अरुणा पाठक आभा ने काव्य पाठ किया-÷मैं पुण्य सलिल नर्मदा तनुजा, रहने को विंध्य प्रदेश मिला÷। छंदों की रसदार बहाते हुए अनुसुइया प्रसाद मिश्र ने अपने काव्य पाठ से सभी का मन मोह लिया- ÷मातु उदास पिता अब व्याकुल मोहन राह तकै अब राधा÷। सुखनंदन प्रजापति ने हिन्दी के मान और सम्मान पर कविता पढ़ी-÷ऐसा नहीं कि हिन्दी के छात्र नहीं मेधावी हैं,

पर देखो यारों हिंदी पर अंग्रेजी अब हाबी है÷।

हिंदी के सुप्रसिद्ध गीतकार डॉ राम सरोज द्विवेदी शांतिदूत ने काव्य पाठ किया-

÷हिंदी संस्कारों की जननी हिंदी कला मंजूषा है,जिसका सूरज कभी न डूबे हिंदी ऐसी ऊषा है÷। बघेली सेवा मंच के अध्यक्ष भृगुनाथ पाण्डेय भ्रमर ने अपनी कविता के माध्यम से वर्तमान पारिवारिक विसंगतियों को उजागर किया-÷विषम स्थिति में भी मां-बाप को मजबूर मत करना,सहारा चाहिए जब उनको खुद से दूर मत करना÷। वरिष्ठ कवि एवं व्यंगकार रामनरेश तिवारी निष्ठुर ने अपने व्यंगों के माध्यम से श्रोताओं को ठहाके लगाने के लिए मजबूर किया।पंक्तियां इस प्रकार हैं-

÷मैंने अपने प्रदेश के प्रमुख राजनीतिज्ञ का नया नुस्खा अपनाया है,और सभी नियमों को थोड़ा शिथिलकरते हुए बताया है÷। शहर की नामचीन शायर हशमत रीवानी ने साम्प्रदायिक सद्भाव एवं देशप्रेम की उत्कृष्ट रचनाएं सुनाई।गजलकार एवं गीतकार शिवानंद तिवारी ने गजल पेश की-

÷किसी से कर लिया वादा तो फिर तोड़ा नहीं जाता,

वो उलझाता बहुत है यार पर छोड़ा नहीं जाता।÷

वो मेरा है नहीं ये बात सच के पास है लेकिन,

उसे खुद से घटाकर और कुछ जोड़ा नहीं जाता।÷

डॉ रजनीश ओजस्वी ने देशप्रेम से ओतप्रोत कविता पढ़ी।

÷ तुम चाहते हो समता और समानता,

यह है तुम्हारी महानता।÷

डॉ विनय दुबे ने श्रृंगार की बड़ी ही मनमोहक रचना प्रस्तुत की।सभी अतिथिगण एवं कवियों का धन्यवाद ज्ञापन विमलेश द्विवेदी ने किया।

अखिल भारतीय साहित्य परिषद द्वारा हिन्दी पखवाड़े पर आयोजित इस कार्यक्रम का संयोजन डॉ. रंजना मिश्रा (महामंत्री,अखिल भारतीय साहित्य परिषद रीवा) ने किया। अतिथिगण एवं कवियों के अलावा कार्यक्रम में अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहें, जिनमें प्रमुख रूप से प्रो.रामभूषण मिश्र(विशेष आमंत्रित सदस्य), विजय दुबे,भूपेंद्र वर्मा,वासुदेव शुक्ला,अखिलेश शुक्ला,रुचि सिंह बघेल,रवि त्रिपाठी,विवेक नामदेव(कोषाध्यक्ष),रामजी पाण्डेय, नरेंद्र गौतम,महेंद्र सिंह,एसएन सिंह, विनायक प्रसाद अग्निहोत्री,शैलेंद्र सिंह और वीरेंद्र सिंह आदि उपस्थित रहे।

24 स्थानों में मनाया गया युवा समाजसेवी एवं कवि सिद्धार्थ श्रीवास्तव का जन्मदिन

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा! सांईशा सोशल वेलफेयर फाउंडेशन के सचिव, आकाशवाणी के उद्घोषक, युवा समा?सेवी एवं कवि सिद्धार्थ श्रीवास्तव का जन्मदिन विभिन्न सामाजिक संगठनो द्वारा लगातार तीन दिनों तक 24 स्थानों पर मनाया गया! उक्त आशय की जानकारी युवा समाजसेवी राजरा?न पटेल ने आज यहाँ पर जारी अपनी लिखित प्रेस विज्ञप्ति में दी है!श्री पटेल ने बताया कि सामाजिक कार्यों के लिए प्रतिबद्ध हमारी टीम के सक्रिय साथी सिद्धार्थ श्रीवास्तव ने विगत 11 बर्षो से निरंतर समाज की सेवा की! यही वजह रही कि विभिन्न सामाजिक संगठनों ने सिद्धार्थ श्रीवास्तव का जन्मदिन अपने अपने ढंग से मनाते हुए उन्हें शुभकामनायें प्रेषित की! जिसमें प्रमुख रूप से महाराष्ट्र मंडल के अध्यक्ष विनोद भट्ट, साईनांजलि समिति की अध्यक्ष अनुराधा श्रीवास्तव, हेल्पिंग हैंड्स फाउंडेशन की अध्यक्ष तमन्ना अंसारी, बेनिसन हेल्पिंग सोसायटी की अध्यक्ष श्लेषा शुक्ला, भिंसार फाउंडेशन के आलोक तिवारी, युवा एकता कल्याण संघ के सचिव सौरभ मिश्रा, गायत्री शक्तिपीठ के हेमराज शर्मा, चित्रगुप्त क्लब के मुकेश पाटेकर, वार्ड 7 की पार्षद अर्चना पांडेय, निवर्तमान पार्षद शिवदत्त पांडेय, युवा समा?सेवी अविराज, शांति इंटरप्राइजेज के संचालक शुभम सिंह, अभिशौर ग्रुप के संचालक अभिषेक सिंह, तीन पांच फिल्म्स के उमेश मिश्रा लखन, वी.एल.सी. फिल्म्स के संजय सेन एवं विकास सेन आर्यन, ग्रामीण बाल प्रतिभा मंच के संचालक उमेश सेन, वरिष्ठ लोकगायिका मणिमाला सिंह, वरिष्ठ गायिका सरगम रीति पांडेय, ग्राम विकास प्रश्फुटन समिति से चक्रपाणि मिश्रा, युवा समा?सेवी मनोज चड्ढा, युवा गायिका संस्कृति तिवारी, साईं फ्लैग्स के संचालक नीलेश गुप्ता, युवा समा?सेवी करन अग्रवाल, मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व विकास क्षमता कार्यक्रम के रीवा विकासखंड के छात्र छात्राएं अनिल कुशवाहा, अभिषेक गुप्ता, लक्ष्मी द्विवेदी, अनुकृति पांडेय, वार्ड 43 कृष्णा नगर के युवा समा?सेवी मोहित यादव, सामाजिक कार्यकर्ता अरविंद पटेल, युवा गायक नीलेश श्रीवास्तव, प्रतीक निगम, अमर सिंह कुशवाहा एवं अतुल पटेल शामिल है!

युवा समाजसेवी सिद्धार्थ श्रीवास्तव ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि - ÷ मैं कृतज्ञ हूँ उन सभी लोगों का जिन्होंने अपना असीम स्नेह देकर जन्मदिन को यादगार बना दिया! हम किसी से यदि धन ऋण के रूप में लेते है तो उसे तो चुका सकते है किंतु प्रेम और भावनाओं के ऋण से कभी उऋण नही हुआ जा सकता! निसंदेह सामाजिक कार्यों के प्रति मेरी जिम्मेदारी अब और ब? जाएगी और मेरा प्रयास रहेगा कि मैं अधिक से अधिक लोगों की सेवा कर सकूँ और लोगों की उम्मीदों और अपेक्षाओं पे खरा उतर सकूँ ÷

गायनी वार्ड में महिला गार्ड और मरीज के परिजनों के साथ जमकर हुई मारपीट, मचा हरकंप

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा। जिले की संजय गांधी अस्पताल एक बार फिर से सुर्खियों में है। यहां मरीज के अटेंडर और अस्पताल के सुरक्षा कर्मियों के बीच भिड़ंत हो गई है यह घटना सोमवार के करीब 5ः30 बजे की है। जानकारी मिलते ही पुलिस ने दो युवकों को हिरासत में लिया है लगातार पूछताछ के बाद छोड़ दिया गया मामले में दोनों पक्षों ने एक दूसरे पर गंभीर आरोप लगाए हैं।यह पूरी घटना विवाद से जुड़ी है जिसका वीडियो भी सामने आया है। जिसमें अस्पताल के गार्ड मरीजों के परिजनों के साथ मारपीट हाथापाई करते नजर आ रहे है। मामले में बुजुर्ग महिला ने अस्पताल के सुरक्षा कर्मियों पर मारपीट के गंभीर आरोप लगा दिए हैं। वह अस्पताल में सुरक्षा कर्मियों ने भी युवकों पर अभद्रता की एवं प्रतिबंधित क्षेत्र में घुसने के आरोप लगाए।

बुजुर्ग महिला के साथ हुई हाथापाई-इस घटना के संबंध में कुसुम देवी के द्वारा बताया गया कि मेरी बहू पुष्पा द्विवेदी अस्पताल के गायनी वार्ड में भर्ती थी जिसके ब्लड सैंपल की जांच कराई जानी थी ,लेकिन जिस वजह से पर्ची देने के लिए मेरे बेटे शिवम द्विवेदी और शुभम द्विवेदी वार्ड में मरीज के पास जाना चाह रहे थे।सुरक्षा कर्मियों के द्वारा उन्हें रोकने का प्रयास किया जिसके बाद अस्पताल के गार्ड धक्का मुक्की एवं मारपीट पर उतर आए मैंने उन्हें रोकने का प्रयास किया लेकिन मुझे धक्का देखकर दूर फेंक दिया । जिसके बाद मेरे साथ भी मारपीट की गई मेरे कमर और हाथ के अंदरूनी अंगों में चोट आई है मैं विनती कर रही थी, लेकिन वह सुनने को तैयार नहीं थे।

मरीज को पर्ची देने जा रहे थे अटेंडर, फिर हुआ विवाद-जानकारी के अनुसार पर्ची देने के लिए मरीज के अटेंडर मरीज के पास जा रहे थे। लेकिन सुरक्षा कर्मियों के द्वारा उन्हें रोका गया दोनों पक्षों में बहस के बाद देखते ही देखते अचानक दोनों पक्षों के बीच हाथापाई शुरू हो गई सुरक्षाकर्मियों दोनों युवकों को पीटते हुए अस्पताल चौकी ले पहुंचे। जिन्हें अमहिया थाना पुलिस को सौपा गया। रिपोर्ट्स के मुताबिक अस्पताल से आए दिन इस तरह की घटनाएं सामने आती रहती है जिनके कारण से अस्पताल सुर्खियों का विषय बना रहता है। महिला गार्ड दीक्षा मिश्रा **का कहना है कि दोनों युवकों ने मेरा फोन तोड़ दिया जिसकी कीमत 32000 थी**-वही इस पूरे मामले पर अमहिया थाना प्रभारी विजय प्रताप सिंह के अनुसार अस्पताल के सुरक्षा कर्मियों और मरीज के परिजनों के बीच जमकर मारपीट का मामला सामने आया है दोनों पक्षों के द्वारा थाने में लिखित शिकायत दर्ज नहीं करवाई गई है आपसी सहमत से मामला सुलझा लिया गया।-

मुख्यमंत्री ने दी स्टेडियम निर्माण तथा लोनी बांध जीर्णोद्धार की सौगात

विन्ध्य क्षेत्र विकास की उड़ान भरने के लिए तैयार है - मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री जी ने 9 माह के कार्यकाल में कई ऐतिहासिक कार्य किए हैं - उप मुख्यमंत्री

दैनिक पुष्पांजली टुडे

रीवा। जिले के त्योंथर विधानसभा क्षेत्र के चाकघाट में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने स्वच्छता ही सेवा अभियान का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री ने समारोह में 33.68 करोड़ के निर्माण कार्यों का लोकार्पण और शिलान्यास किया। भारी वर्षा तथा विपरीत मौसम के कारण मुख्यमंत्री जी समारोह में जबलपुर से वर्चुअली शामिल हुए। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल तथा नगरीय विकास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी भी जबलपुर से वर्चुअल माध्यम से समारोह में शामिल हुईं। चाकघाट में भारी वर्षा के बीच हजारों की भीड़ को वर्चुअल माध्यम से संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि विन्ध्य विकास की उड़ान भरने के लिए तैयार है। विन्ध्य में विकास के सभी संसाधन उपलब्ध हैं। अगले माह रीवा में मैं इन्वेस्टर्स मीट में आऊंगा। इन्वेस्टर्स मीट से खनिज, पर्यटन और कृषि आधारित उद्योगों में भारी मात्रा में निवेश के साथ हजारों युवाओं को रोजगार का अवसर मिलेगा। इन्वेस्टर्स मीट विन्ध्य के विकास के लिए छलांग साबित होगी।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि आज देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा विधानसभा अध्यक्ष रहे स्वर्गीय श्रीयुत श्रीनिवास तिवारी जी का जन्मदिन और भगवान विश्वकर्मा की जयंती है। इन सभी को नमन करने के लिए मैं चाकघाट आना चाह रहा था, लेकिन लगातार भारी वर्षा ने मुझे चाकघाट नहीं पहुंचने दिया। वर्चुअल माध्यम से त्योंथर की जनता से जुड़कर मुझे बहुत खुशी हो रही है। आज प्रधानमंत्री जी ने प्रदेश के सभी जिलों में जन औषधि केन्द्रों का शुभारंभ किया है। इसके लिए प्रधानमंत्री जी को मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ। जन औषधि केन्द्र से आमजनता को सस्ती गुणवत्तापूर्ण दवाएं मिलेंगी। प्रदेश की लाड़ली बहना हितग्राहियों को रक्षाबंधन पर विशेष उपहार दिया गया था। बहनों तथा युवाओं को स्वरोजगार का अवसर देने के लिए शीघ्र ही नई योजनाएं शुरू की जाएंगी। दूध का उत्पादन बड़ाने के लिए दूध उत्पादक किसानों को भी बोनस दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विन्ध्य के विकास के लिए हर संभव सहायता दी जाएगी। रीवा में शीघ्र ही एयरपोर्ट का शुभारंभ हो रहा है। इससे उद्योगों के विकास को गति मिलेगी। त्योंथर में पाँच एकड़ जमीन उपलब्ध हो जाने पर स्टेडियम का निर्माण कराया जाएगा। लोनी बाँध तथा इसकी नहरों के जीर्णोद्धार के लिए 507 लाख रुपए के प्राक्कलन को मंजूरी दी गई है। इससे 1656 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा मिलेगी। त्योंथर बांई नहर लिंक परियोजना के लिए भी राशि मंजूर कर दी गई है। इससे 1400 हेक्टेयर में सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। त्योंथर क्षेत्र में 400 एकड़ में औद्योगिक विकास केन्द्र का निर्माण किया जाएगा। ससुराल होने के नाते रीवा से मेरा विशेष नाता है।

ऐश्वर्या राय

की राह पर चलेंगी दीपिका पादुकोण, इस तरह करेंगी बेटी की देखभाल

8 सितंबर को दीपिका पादुकोण ने बेटी को जन्म दिया, जिसके बाद रविवार को उन्हें हॉस्पिटल से डिस्चार्ज कर दिया गया. अभी तक बेबी गर्ल की कोई भी तस्वीर सामने नहीं आई है. कहा जा रहा है कि दीपिका अपनी बच्ची की देखभाल के लिए ऐश्वर्या और अनुष्का की राह पर चलने वाली हैं.

बॉलीवुड के पावर कपल दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह ने गणेश चतुर्थी के अगले दिन यानी 8 सितंबर को नन्हे मेहमान का वेलकम किया. जब से दीपिका ने बेबी गर्ल को जन्म दिया है उनके फैन्स और बॉलीवुड के तमाम सेलिब्रिटीज दोनों को बधाई दे रहे हैं, जिनमें आलिया भट्ट, प्रियंका चोपड़ा, निक जोनस, कटरीना कैफ और सारा अली खान समेत और भी कई सेलिब्रिटीज का नाम शामिल है. बेटी के जन्म से दीपिका मुंबई के एच एन रिलायंस हॉस्पिटल में थीं, जहां से वो रविवार को डिस्चार्ज हो गई हैं.दीपिका 7 सितंबर की शाम से ही हॉस्पिटल में एडमिट थीं. जन्म के बाद से अभी तक कपल ने बेबी गर्ल की तस्वीर कही भी शेयर नहीं की है और कहा जा रहा है कि दोनों अनुष्का और विराट की तरह ही अपनी बेटी के लिए नो फोटो पॉलिसी अपनाएंगे. रणवीर सिंह और दीपिका ने सोशल मीडिया पर बेटी की जन्म की खबर पोस्ट की थी. हाल ही में बॉलीवुड लाइफ की एक रिपोर्ट सामने आई है, जिसमें बताया गया है कि दीपिका अपनी बेटी के लिए ऐश्वर्या राय बच्चन और अनुष्का शर्मा की राह अपनाने वाली हैं.

दीपिका खुद से करेंगी बेटी की देखभाल

जैसे ऐश्वर्या ने आराध्या की देखभाल खुद से की और जैसे अनुष्का शर्मा ने अपने दोनों बच्चों वामिका और अकाय को मीडिया से दूर रखा, इसी कदम पर दीपिका भी आगे बढ़ेंगी. रिपोर्ट में बताया गया कि उन्होंने डिसाइड किया है कि वो अपना ज्यादातर वक्त अपनी बेटी को देंगी, उसके पालन-पोषण वो खुद करेंगी इसके लिए वो किसी और की मदद नहीं लेंगी. शादी के 6 साल बाद दोनों को पेरेंट्स बनने की खुशी मिली है.

बेबी गर्ल के लिए अपनाएंगे नो फोटो पॉलिसी

अनुष्का और विराट की तरह ये दोनों भी अपनी बेटी की तस्वीर तब तक सामने नहीं लाएंगे, जब तक वो उसे लोगों के सामने इंट्रोड्यूस कराने के लिए पूरी तरह से तैयार न हो जाएं. नो फोटो पॉलिसी के जरिए दीपिका और रणवीर अपनी बेटी को मीडिया से दूर रखेंगे. फिल्मों की बात करें तो दीपिका फिलहाल मैटरनिटी लीव पर रहेंगी. उनकी ये लीव साल 2025 के आखिर तक चलेगी. लीव खत्म होने के बाद दीपिकी 'कल्कि 2898 एडी' के सीक्वल पर काम करेंगी. उनकी आखिरी रिलीज फिल्म भी 'कल्कि' ही है, जो इसी साल मई में रिलीज हुई है. नाग अश्विन के डायरेक्शन में बनी इस फिल्म में प्रभास और अमिताभ बच्चन भी नजर आए. फिल्म ने वर्ल्डवाइड 1041 करोड़ की कमाई की.

दीपिका और रणवीर दोनों ही रोहित शेट्टी की फिल्म 'सिंघम अगेन' में नजर आने वाले हैं. ये फिल्म दिवाली के मौके पर सिनेमाघरों में रिलीज होगी. 'सिंघम अगेन' एक मल्टीस्टारर फिल्म है. अजय देवगन, अर्जुन कपूर, जैकी श्रॉफ भी इस फिल्म का हिस्सा हैं. इसके बाद रणवीर सिंह 'डॉन 3' में भी नजर आने वाले हैं.

हॉलीवुड फिल्म की कॉपी है राजकुमार राव और तृप्ति डिमरी की 'विकी और विद्या का वो वाला वीडियो'? सामने आ गया सच

'स्त्री 2' की शानदार सक्सेस के बाद से राजकुमार राव अपनी अगली धमाकेदार फिल्म में नजर आ रहे हैं. ये फिल्म रोमांटिक कॉमेडी है, जिसमें उनके साथ लीड एक्ट्रेस के तौर पर तृप्ति डिमरी हैं. फिल्म का टाइटल 'विकी और विद्या का वो वाला वीडियो' है, जिसका ट्रेलर 12 सितंबर को रिलीज किया गया है. फिल्म का ट्रेलर देखने में बहुत मजेदार है. फिल्म का ट्रेलर साल 2014 में आई हॉलीवुड फिल्म की याद दिला रहा है, जिसकी कहानी भी कुछ इसी तरह की थी.साल 2014 में हॉलीवुड की एक रोमांटिक कॉमेडी आई थी, जिसमें कैमरून डियाज और जेसन सेगल लीड रोल में थे. इस फिल्म का टाइटल 'सेक्स टेप' था. फिल्म में इस कपल की भी रिकॉर्ड की हुई टेप अचानक से गुम जाती है, जिससे उनको काफी शर्मिंदगी का सामना करना पड़ता है. बाकी की स्क्रिप्ट उस टेप को खोजने और सिचुएशन से निकलने की कहानी दिखाती है. 'सेक्स टेप' को जेसन, केट एंजेलो और निकोलस स्टोलर ने मिलकर लिखा था. हॉलीवुड की इस फिल्म के जैसे ही 'विकी और विद्या का वो वाला वीडियो' के भी ट्रेलर में दिखाया गया है. जिसमें एक नया शादीशुदा जोड़ा अपनी सुहागरात का वीडियो बनाता है, जिसकी सीडी खो जाती है, जिसके बाद सभी मिलकर उसे खोजने की कोशिश करते हैं.

दोनों फिल्मों में क्या अलग ?

हालांकि, दोनों ही फिल्मों में अलग ये है कि जहां 'विकी और विद्या का वो वाला वीडियो' में दोनों की नई शादी हुई होती है, तो वहीं हॉलीवुड की फिल्म में दोनों कपल की शादी को कई साल हो चुके होते हैं और दोनों के बच्चे भी होते हैं. हालांकि, अब फिल्म के रिलीज होने के बाद ये पता चलेगा की क्या 'विकी और विद्या का वो वाला वीडियो' हॉलीवुड फिल्म की कॉपी है या नहीं. 'विकी और विद्या का वो वाला वीडियो' के बारे में बताए तो ये फिल्म 11 अक्टूबर को रिलीज होगी. इस फिल्म के जरिए मल्लिका शेरावत ने काफी लंबे समय के बाद एक धमाकेदार वापसी की है. ट्रेलर में ही कई सारे मजेदार डायलॉग सुनने को मिलते हैं, जिससे फिल्म में कॉमेडी के लेवल का अंदाजा लगाया जा सकता है.

हमें ज्यादा ज्ञान न दे...उर्फी जावेद की वो 5 आदतें, जो उनके परिवार को खटकती हैं

उर्फी जावेद अपने अतरंगी कपड़ों की वजह से अक्सर सोशल मीडिया पर वायरल होती रहती हैं. हालांकि उर्फी नहीं चाहतीं कि उन्हें सिर्फ उनके अजीबोगरीब कपड़ों की वजह से पहचाना जाए. यही वजह है कि जब उन्हें 'फॉलो कर लो यार' जैसी रियलिटी सीरीज ऑफर हुई तब उन्होंने तुरंत इस सीरीज को करने के लिए हां कर दी. इस सीरीज में उर्फी की पूरी जिंदगी को कैमरा के सामने दिखाया गया है. यानी लगभग एक महीने तक, कैमरा दिन के 24 घंटे उर्फी और उनके हर करीबी को फॉलो कर रहा था. जिस तरह से इस सीरीज को प्राइम वीडियो प्रमोट कर रहा है, उसे देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि जल्द इस सीरीज का दूसरा सीजन भी लाइव होगा. इस खास मौके पर टीवी9 हिंदी डिजिटल ने उर्फी के परिवार से संपर्क किया और जाना कि उर्फी की ऐसी कौन-सी आदतें हैं, जो उन्हें नहीं पसंद.इस सवाल का जवाब देने के लिए उर्फी की छोटी बहन और उनके बिजनेस मैनेजर ने तो साफ मना कर दिया. उनकी सबसे छोटी बहन डॉली जावेद ने कहा कि मुझे उर्फी के साथ रहना है, इसलिए मैं तो ये बिल्कुल भी नहीं बताऊंगी. तो उनके बिजनेस मैनेजर ने कहा कि उन्हें उर्फी के साथ आगे भी काम करना है और इसलिए वो नहीं चाहेंगे कि वो उनकी बुरी आदत बताकर उर्फी से कोई पंगा लें. अब जान लेते हैं कि उर्फी के बाकी परिवार वालों का क्या कहना है.

उर्फी की बड़ी बहन ने क्या कहा

उर्फी की बड़ी बहन उरूसा ने कहा, उर्फी की अपने बहनों को गिफ्ट देने की और उनको खास महसूस कराने (पैम्पर) की आदत मुझे पसंद है. लेकिन बस हमें वो ज्ञान न दे. वो ज्ञान बहुत देती है और उनकी ये आदत मुझे पसंद नहीं है.उर्फी की दूसरी बहन असफी जावेद ने बताया कि वैसे तो उर्फी की केयर करने की आदत उन्हें पसंद है. वो उनकी सभी जरूरतों का खयाल रखती हैं. लेकिन कभी जताती नहीं हैं. अगर उन्होंने देखा कि कोई बीमार है तो वो उन्हें दवाई भी दे देंगी. लेकिन कभी-कभी वो इतनी ज्यादा केयरिंग हो जाती हैं कि सामने वाले को उनकी स्पेस नहीं देतीं और उर्फी की ये आदत उन्हें पसंद नहीं.

नहीं पसंद उर्फी की हड़बड़ाहट

उर्फी के पर्सनल मैनेजर और उनकी बहन असफी के बॉयफ्रेंड साहिल हबीब खान का कहना है कि उर्फी का अनुशासन मुझे सबसे ज्यादा पसंद है, वो इतनी ज्यादा डिसिप्लिन हैं कि उससे ज्यादा अनुशासित इंसान मैंने अपनी जिंदगी में नहीं देखा. लेकिन उसकी हर चीज को जल्दी करने की आदत मुझे नहीं पसंद. वो हर चीज हड़बड़ाहट में करने की कोशिश करती हैं. यानी अगर कोई चीज 5 मिनट में करेंगे, बोल दिया तो वो 5 मिनट में 3 बार आपको कॉल करेंगी.

माहिरा खान

ने बेटे की 15 साल पुरानी तस्वीर दिखाई, अनन्या पांडे ने दिल निकालकर रख दिया

एक्ट्रेस माहिरा खान पाकिस्तानी फिल्म इडस्ट्री की बेहतरीन अदाकारा में से एक हैं. माहिरा खान की सिर्फ पाकिस्तान में ही नहीं बल्कि इंडिया में भी काफी अच्छी फैन फॉलोइंग है. माहिरा खान अक्सर अपनी सोशल मीडिया पोस्ट की वजह से चर्चा में रहती हैं. अब एक्ट्रेस फिर से सुर्खियों में आ गई हैं. दरअसल, माहिरा ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट इंस्टाग्राम पर अपने बेटे अजलान की 15 साल पुरानी तस्वीर शेयर की है, जिसपर अनन्या पांडे ने भी रिएक्ट किया है.माहिरा खान ने बेटे अजलान के जन्मदिन के मौके पर रविवार को इंस्टाग्राम अकाउंट पर 15 साल पुरानी फोटो शेयर की. ये फोटो उनके बेटे अजलान के जन्म के समय की है. माहिरा खान ने अजलान को बर्थडे विश करते हुए लंबा सा कैप्शन भी लिखा है.

एक्ट्रेस माहिरा खान ने फोटो पोस्ट करते हुए कैप्शन में लिखा- 24 साल की मैं अपनी पूरी दुनिया को निहारते हुए. मेरा इकलौता अजलान. 15.09.09. इसके अलावा एक्ट्रेस ने आगे लिखा, अल्लाह मेरे अजलान और सभी बच्चों की हिफाजत करे, उन्हें खुशी और हेल्दी लाइफ के साथ लंबी उम्र मिले. वो अच्छे रास्ते चुनें. उन्हें हमेशा बुराइयों से बचाए. आमीन, आमीन.

फोटो पर लगाया ये सॉन्ग

माहिरा खान ने फोटो के कैप्शन में आगे लिखा, मेरी अम्मा कहती हैं- सारी माओं के दिल ठंडा रख या रब. आमीन, इंशाअल्लाह. इस फोटो पर एक्ट्रेस ने हॉलीवुड रॉक बैंड बीटल्स का सॉन्ग 'हे जूड' लगाया और गाने के बारे में माहिरा ने लिखा कि ये वो गाना है जो अज्जू (अजलान) को सबसे ज्यादा तब सुनाया गया, जब वो मेरे पेट में था और जब वो पैदा हुआ था! उसे अभी भी बीटल्स बहुत पसंद है.

अनन्या ने भी लुटाया प्यार

माहिरा खान के इस तस्वीर को शेयर करते ही कई पाकिस्तानी और बॉलीवुड सेलेब्रिटीज उनकी इस पोस्ट पर कमेंट करने लगे.

करैरा ग्राम पंचायतों में कमीशनखोरी की दलदल में फसा विकाश

सरपंच, सचिव,सहायक सचिव, इजीनियर, ए ई, जनपद के अधिकारी कर्मचारियो, फर्जी बिल लगाने बाली फर्मो को मिलाकर लिया जाता है

आखिर कैसे लिखीं जाएं पंचायतों की उज्जवल बिकाश की कहानियाँ

आमोलपठा मध्यप्रदेशमें पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा करोडों रूपय ग्राम पंचायतों की दशा और दिशा सुधारने के लिए पानी की तरह नई- नई योजनायें लाकर बहाया जा रहा है। लेकिन इसके बाद भी नजर अंदाज किया जाएं तो ग्राम पंचायतों की हालत बेहद दयनीय है कोई भी बिकाश कार्य गुणवत्ता युक्त नहीं हो पा रहा है।कोई भी ग्राम पंचायतों में चल रही योजनाओं की स्थिति पर गौर कर नजर दौडा लो तो हर योजना कहीं न कहीं शिष्टाचार के माध्यम से भ्रष्टचार की भेंट चड़ी हुई है। आखिर किसी भी जनप्रतिनिधि ने इस पर बिचार क्यू नहीं किया ऐसा नहीं है कि इसकी जानकारी जनप्रतिनिधि एवं अधिकारियों को नहीं है। करैरा विधानसभा की ग्राम पंचायतों में योजनाओ का लाभ पहुचाया जा रहा है। लेकिन पंचायत के कर्ताधर्ताओं द्वारा राशि का दुरुपयोग कर भ्रष्टचार की भेंट चड़ाई जा रही है। ऐसा ही एक मामला ग्राम पंचायत नारही का सामने देखने को मिला जहां ग्रामीणो को आम रास्ते में सनी हुई कीचड़ से गुजरना पड रहा है। कई बार ग्रामीणों ने सरपंच व सचिव से गुहार लगा चुके लेकिन सुनकर आना कानी कर दी और आम रास्ते में थौडी-थौडी मरम्मत कराकर छोड़ दी और उसी रास्ते में जगह-जगह गड्ढे भी हो चुके जिससे दो पहिया वाहन निकलने में मुश्किल हो रहा है। वहीं ग्राम पंचायत नारही में सरपंच एवं सचिव द्वारा फर्जी मस्टर डाल कर अपने चाहते लोगों के खाते में राशि डालकर निकलवा ली जाती है। और उस राशि को मिल बांट कर खुर्दबुर्द की जा रही है।

बीघा वनभूमि पर लहलहा रही मूमफली की फसल

ग्रामीण बोले कलेक्टर से लेकर डीओफो तक दर्ज करा चुके हैं, पर नहीं होती कार्रवाई,वन विभाग से साठ-गांठ कर दमंगो ने किया वनभूमि पर कब्जा

आमोलपठा । शिवपुरी जिले के अमोला रेंज के अर्तगत दक्षिण में घसारही एवं नारही में बर्षों से दमंग लोगों द्वारा वनभूमि की करीब 500 बीघा जमीन पर अबैध कब्जा कर फसल कर रहे हैं। बर्तमान समय में इस जमीन पर मूंगफली की फसल लहलहा रही है। बताया जा रहा है कि इस पूरे खेल में डिप्टी रेंजर मोहन लोधी और बीट गार्ड सुनील सोहरे की मिली भगत से हो रहा है। शिकायतकर्ताओं ने लिखित शिकायत जिला कलेक्टर से लेकर डीओफो तक शिकायत कर चुके लेकिन आज तक कोई कार्यवाई नहीं हुई। इधर दमंग लोगों ने ग्रामीणों की आम रास्ता को भी बंद कर दिया हैं जिससे उनकी निजी भूमि पर आने जाने में निकलना मुश्किल हो रहा और पशुओं को भी निकलने नहीं दे रहें ।ग्रामीणों ने बताया कि बर्तमान सरपंच राजेन्द्र ठाकुर का कहना है कि चाहे जितनी शिकायत करलो मेरा कुछ नहीं बिगार सकते और न ही फोरेस्ट विभाग मेरी वनभूमि की जमीन जोत पायगी क्योंकि फोरेस्ट विभाग में मेरे अच्छे संबंध है और पैसा भी देता हू।यह भी आरोप लगाया गया है कि सरपंच द्वारा और अन्य लोगों को भी वनभूमि पर अबैध कब्जा कराये हुए हैं। इसलिए तमाम शिकायतों के बाद भी इस भूमि से कब्जा हटाने की कार्यवाही नहीं हो रही। अमोला दक्षिण रेंज के अर्तगत घसारही एवं नारही के ग्रामीण भरत सिंह ठाकुर, सालिकराम जाटब, बादाम पाल, रमेश पाल, रामभरोसा जाटब, गोविन्द प्रजापति, कप्तान परिहार, जगदीश जाटब, चंद्रभान परिहार, लाला आदिवासी, खम्मा बाई आदिवासी आदि ने बताया कि घसारही एवं नारही में वनभूमि की 500 बीघा जमीन हैं।

यहां पर करैरा रेंजर अनुराग तिवारी की साठ - गांठ से घसारही एवं नारही गांव के राजेन्द्र सिंह ठाकुर, रूप सिंह गुर्जर, गोपाल सिंह ठाकुर, बाघ सिंह ठाकुर,बल्लू ठाकुर जुगहा, किशोरी जाटब, महेश जाटब, विजय जाटब,बल्ली जाटब, अबदेश लोधी, लालू गुर्जर सिलानगर सहित अन्य लोगों ने भी वनभूमि पर कब्जा कर रखा है। इन लोगों ने इस जमीन पर खड़े पेड पौधों को काट दिया और 500 बीघा पूरी जमीन में मूंगफली की फसल लगाकर रखी हैं। इस मामले में गांव के लोगों ने फोरेस्ट विभाग से लेकर कलेक्टर को शिकायत दर्ज कराई हैं।इस के बाद भी कोई कार्यवाई नहीं हुई।

केन्द्रीय मंत्री एसपी सिंह बघेल के मुख्य आतिथ्य में पाल बघेल समाज का संभागीय सम्मेलन 20 को करैरा में /

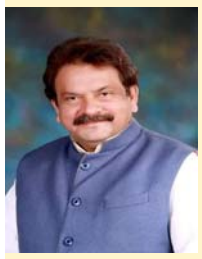

दैनिक पुष्पांजलि टुडे से सतीश परिहार करैरा

शिवपुरी– पाल बघेल धनगर समाज का संभागीय सम्मेलन 20 सितम्बर को करैरा में केन्द्रीय मंत्री एस.पी. सिंह बघेल के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में पाल बघेल धनगर महासभा के राष्ट्रीय अध्यसक्ष राकेश पाल, पूर्व विधायक लाखन सिंह बघेल, पूर्व विधायक राधेलाल बघेल उपस्थित रहेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पाल बघेल धनगर महासभा के प्रदेश अध्यक्ष इंजी. गोपाल सिंह पाल दददा द्वारा की जाएगी। कार्यक्रम का आयोजन दोपहर 12 बजे से किया जाएगा। कार्यक्रम में पाल बघेल धनगर महासभा शिवपुरी के जिलाध्यक्ष एडव्होकेट रामस्व रूप बघेल, नरवर जनपद अध्यक्ष प्रियंका गौरव पाल, गिर्राज पहलवान, जिला पंचायत सदस्य हेमलता हरिकृष्ण बघेल, जिला पंचायत सदस्या केशव बघेल, जिला पंचायत सदस्य नंदराम बघेल, युवा जिलाध्यक्ष शिशुपाल बघेल, पार्षद ज्योति राजा दिनेश बघेल एवम शिवपुरी जिले के भिवित्र पंचायतों से चुनकर आए जनपद सदस्य एवम सरपंच मौजूद रहेंगे। कार्यक्रम में समाज बंधुओं से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होने की अपील आयोजकों ने की है।

मोदी जी के जन्मदिन के अवसर पर नगर रन्नौद में हितग्राहियों को कराया ग्रह प्रवेश

प्रदीप जैन (पिंटू) रन्नौद

नगर परिषद रन्नौद में माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्म दिवस के उपलक्ष में आज प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत स्वीकृत हुए आवास का कार्य पूर्ण कर चुके हितग्राहियों को ग्रह प्रवेश कराया गया और हितग्राहियों को नया घर मिलने पर उनका फूल मालाओं से स्वागत कर बधाई शुभकामनाएं दी गई। ग्रह प्रवेश नगर परिषद के वॉर्ड कर्मांक सात एव वार्ड क्रमांक चार से करा कर सुरु किया गया अव अन्य वार्डो में भी ग्रह प्रवेश कार्यक्रम निरंतर चलेगा कार्यक्रम में नगर परिषद सीएमओ मयूर वाहने, नगर परिषद अध्यक्ष पति जमुना प्रसाद कुशवाह, भाजपा मंडल अध्यक्ष अवध बोहरे, वार्ड क्रमांक सात पार्षद पुत्र कोशलेश शर्मा, इंजीनियर अरविंद सतसैया, इंजीनियर राहुल भदौरिया, बलराम खटीक, एवम बालमीक समाज से सफाई कर्मी एवम अन्य नागरिक उपस्थित रहे।

शासकीय स्कूलों के पास धड़ल्ले से बिक रही हैं अवैध शराब

प्रदीप जैन (पिंटू) की खास रिपोर्ट

रन्नोद थाना क्षेत्र के दर्जनों गांव में आबकारी विभाग के अधिकारियों की मिलीभगत के चलते स्थानीय लाइसेंसी शराब ठेकेदार के माध्यम से ही अवैध शराब बिक्री करवाई जा रही है। इसको लेकर क्षेत्रीय ग्रामीण महिलाएं एवं जनप्रतिनिधि कई बार लामबंद हो चुके हैं। इस मुद्दे पर स्थानीय नेताओ ने भी आपत्ति जताते हुए गांवों में शराब की अवैध बिक्री रोकने की बात कही परंतु यह गोरखधंधा बदस्तूर चल रहा है। इस पर रोक नहीं लग पा रही है। रन्नोद के माडा गणेश में शासकीय स्कूलों के पास में मुख्य मार्ग पर एक दुकान पर रखकर शराब बेची जा रही हैं तो वही अकाझिरी माध्यमिक विधालय के पास 100 मीटर के दायरे में कलारी में खुलेआम रख कर अवैध शराब की बिक्री की जा रही है यह अवैध शराब की दुकानें वर्षो से बिना रोक टोक के वेखोफ संचालित की जा रही है यही कारण हैं कि लाइसेंसी ठेकेदार अवैध शराब बिक्री गाँव गाँव में ध?ल्ले से करा रहा है।

लंबे समय से गांवो में हो रही शराब की अवैध बिक्री–बता दें कि, सेसई, ढेकुआ, धंदेरा, अकाझीरी, करोंदी, माडा, खरेह, बीजरी, अकोदा, सहित विभिन्न ग्रामों में स्थानीय लाइसेंसी शराब ठेकेदार के संरक्षण में लंबे समय से गांवों में शराब की अवैध बिक्री की जा रही है। आबकारी विभाग की मिलीभगत से शराब ठेकेदार द्वारा खुद के वाहनों से खुलेआम गांव-गांव दुकानें खुलवाकर अंग्रेजी एवं देशी शराब बेची जा रही है। जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में आए दिन झगड़े हो रहे है। वहीं विशेष तौर पर पुरुषों की शराबखोरी की लत के कारण महिलाएं परेशान हो रही हैं। गृह कलह से जूझ रही है।

युवा में पड़ रही नशे की लत -दर्जनभर ग्रामों में अवैध शराब खुलेआम बिकने के कारण युवा नशे की लत में पड़ते जा रहे हैं और जिम्मेदार हाथ पर हाथ रखे बैठे हुए हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आए दिन मारपीट के मामले सामने आ रहे हैं परिवारों में आपसी कलह देखी जा रही है जिसका मुख्य कारण शराब ही है। जो युवा देश का भविष्य है आज नशे की लत के कारण मदहोशी में पड़ा है और जिम्मेदार बेखबर हैं।

विभाग के जिम्मेदार कार्रवाई के नाम पर करते हैं खानापूर्ति –वहीं ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि क्षेत्र में खुलेआम अवैध शराब बेची जा रही विभाग के अधिकारियों को कई बार अवगत करा चुके हैं इसके बावजूद विभाग के जिम्मेदार कार्रवाई के नाम पर खानापूर्ति करते हैं। अवैध कारोबारियों का गोरखधंधा जैसा चल रहा है चलता रहता है इसलिए इन्हें किसी की कोई परवाह नहीं है, क्योंकि विभाग के जिम्मेदार भी इस गोरखधंधे में शामिल हैं।

लवमैरिज से भड़के पिता ने की बेटी के ससुर की मारपीट कर की हत्या,पुलिस ने आरोपियों को किया गिरफ्तार

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी - जिले की भौंती पुलिस ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करते हुए रश्मि लोधी, नीरज लोधी, मेहरवान सिंह लोधी, सरूपी लोधी की मारपीट करने एवं सिरनाम सिंह लोधी की मारपीट कर हत्या करने वाले आरोपीगण ओमकार पुत्र स्व. देवलाल लोधी उम्र 56 साल, भगवान सिंह पुत्र ओमकार लोधी उम्र 27 साल एवं लवकुश पुत्र ओमकार लोधी उम्र 25 साल निवासीगण ग्राम बमेरा थाना भौंती को अपराध पंजीबद्ध होने के बाद मात्र 36 घंटे में गिरफ्तार कर आरोपीगणों से घटना में प्रयुक्त आलाजरर बरामद किये गये ।

यह है मामला कि दिनांक 16.09.24 को फरियादिया रश्मि लोधी पत्नि नीरज लोधी उम्र 23 साल निवासी ग्राम बमेरा थाना भौंती की रिपोर्ट पर से आरोपीगण ओमकार पुत्र देवलाल लोधी, भगवान सिंह पुत्र ओमकार लोधी एवं लवकुश पुत्र ओमकार लोधी निवासीगण ग्राम बमेरा के विरूद्ध थाना भौंती पर अपराध क्र. 258/24 धारा 115(2),296, 351(3),3(5) बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध करते हुए घायल व्यक्तियों को इलाज हेतु सीएचसी पिछोर ले जाया गया

जहाँ से गंभीर घायल मजरूब मेहरवान सिंह लोधी व सिरनाम सिंह लोधी निवासीगण बमेरा को मेडीकल कॉलेज शिवपुरी इलाज हेतु रैफर किया गया, दौराने इलाज घायल मजरूब सिरनाम सिंह लोधी पुत्र बैजनाथ लोधी उम्र 67 साल निवासी बमेरा की मेडकील कॉलेज शिवपुरी में मृत्यु हो गयी जिस पर से प्रकरण में धारा 109, 103(1) बीएनएस इजाफा की गयी एवं मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया गया, श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय श्री अमन सिंह राठौड़ ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल एसडीओपी पिछोर को आरोपीगणों की गिरफ्तारी के निर्देश दिए, श्रीमान एसडीओपी श्री प्रशान्त शर्मा के नेतृत्व में थाना प्रभारी भौंती निरीक्षक गीतेश शर्मा ने पुलिस टीम बनाकर मारपीट कर हत्या करने वाले आरोपीगणों की गिरफ्तारी हेतु घटना स्थल के आस-पास के गांवों में पूछताछ की गई एवं मुखविर मामूर किये गये तत्पश्चात जरिए मुखबिर सूचना मिली कि उक्त अपराध के आरोपीगण भागने की फिराक में चौमूहा तिराहे पर किसी वाहन का इंतजार कर रहे है, तब थाना भौंती पुलिस ने महज 36 घंटो के अंदर कडी मेहनत कर फोर्स की मदद से उक्त तीनों आरोपीगणों को घेर कर पकडा व नाम पता पूछने पर अपने नाम ओमकार पुत्र स्व. देवलाल लोधी उम्र 56 साल, भगवान सिंह पुत्र ओमकार लोधी उम्र 27 साल एवं लवकुश पुत्र ओमकार लोधी उम्र 25 साल निवासीगण ग्राम बमेरा थाना भौंती का बताया जिन्हे गिरफ्तार कर घटना में प्रयुक्त आलाजरर बरामद किये गये एवं उक्त आरोपीगणों को आज माननीय न्यायालय में पेश किया गया आरोपीगणों की गिरफ्तारी में निरीक्षक गीतेश शर्मा थाना प्रभारी भौंती के अलावा उनि. रामनिवास शर्मा, प्रआर.224 राजेश शर्मा, आर.1188 धर्मवीर रावत, आर.534 रामप्रसाद गुर्जर एवं आर.98 ब्रजराज सिंह थाना भौती की महत्वपूर्ण भूमिका रही

आशा कार्यकर्ताओं ने कलेक्टर से की शिकायत, बोली आधा अधूरा मिल रहा है वेतन, घर चलाने में आ रही है परेशानी

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी - जिले में आज आशा कार्यकर्ताओं ने कलेक्टर को एक ज्ञापन सौंप कर नियमित रूप से एक मुस्त वेतन और प्रोत्साहन राशि दिलवाए जाने की मांग की है। आशा कार्यकर्ताओं का यह भी कहना था कि उन्हें पिछले 4 माह से वेतन नहीं मिला है उनकी वेतन में से कट कट कर राशि दी जा रही है। इससे उन्हें परिवार के संचालन में परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। आशा कार्यकर्ताओं ने बताया कि कई आशा कार्यकर्ता किराए का कमरा लेकर अपने बच्चों को पढ़ा रहीं हैं। ऐसे में वेतन न मिलने के चलते उन्हें आर्थिक संकट के दौर से गुजरना पड़ रहा है। इससे पहले जिले की सभी आशा कार्यकर्ता एक मुस्त वेतन और प्रोत्साहन राशि देने की गोहर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी से लगा चुकी हैं। लेकिन अब तक उनकी कोई भी सुनवाई नहीं हुई है। इसी की फरियाद लेकर आज वह कलेक्टर के पास आईं हैं सभी आशा कार्यकर्ताओं ने एक मुस्त वेतन और प्रोत्साहन राशि दिलाए जाने की मांग की है।

स्वच्छता अभियान में सभी की भागीदारी से ही मिलेगी सफलता - प्रभारी मंत्री

स्वच्छता ही सेवा अभियान का हुआ शुभारंभ ,प्रभारी मंत्री ने दिलाई स्वच्छता की शपथ

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- पूरे प्रदेश में प्रधानमंत्री जी के जन्मदिन 17 सितंबर से स्वच्छता ही सेवा अभियान का शुभारंभ किया गया है। 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक स्वच्छता पखवाड़े के रूप में मनाया जाएगा। शिवपुरी में जिला स्तरीय कार्यक्रम मानस भवन में आयोजित हुआ। ऊर्जा मंत्री और शिवपुरी जिले के प्रभारी मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर के मुख्य आतिथ्य में जिले में स्वच्छता ही सेवा अभियान का शुभारंभ किया गया। प्रभारी मंत्री ने सभी को स्वच्छता की शपथ दिलाई। साथ ही इस अभियान में सभी से भागीदारी करने की अपील की है। प्रभारी मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वच्छता एक ऐसा विषय है जो हमारे प्रतिदिन की दिनचर्या में शामिल होना चाहिए। स्वच्छता हमारे व्यवहार में शामिल होना जरूरी है और इस अभियान की सफलता तभी है जब सभी इसमें भागीदारी करें। हम सभी यह प्रण लें कि हम अपने घर अपने आसपास सफाई रखेंगे और हमारे जिले को स्वच्छ बनाएंगे। उन्होंने कहा कि हम केवल एक दिवस अभियान के रूप में ना बनाएं बल्कि प्रत्येक दिन यह अभियान हमारे व्यवहार का हिस्सा होना चाहिए। तभी इस अभियान की वास्तविक सार्थकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन से इस अभियान की शुरुआत की जा रही है और हमें स्वच्छ भारत अभियान के उनके सपने को साकार करना है।इस मौके पर विधायक शिवपुरी देवेन्द्र जैन, विधायक कोलारस महेन्द्र यादव, जिलाध्यक्ष राजू बाथम, नगर पालिका अध्यक्ष गायत्री शर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष नेहा यादव सहित अन्य जनप्रतिनिधि, कलेक्टर रवीन्द्र कुमार चौधरी, पुलिस अधीक्षक अमन सिंह राठौर, सीईओ जिला पंचायत हिमांशु जैन नपा सीएमओ इशांक धाकड़ सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।**बाणगंगा स्थल में किया श्रमदान**– स्वच्छता ही सेवा अभियान के शुभारंभ के साथ ही प्रभारी मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर और अन्य जनप्रतिनिधियों ने बाणगंगा स्थल पर श्रमदान किया और स्वच्छता का संदेश दिया।

नगर वन लुधावली में किया वृक्षारोपण – प्रभारी मंत्री अपने भ्रमण के दौरान कई कार्यक्रमों में शामिल हुए और उन्होंने आईटीआई के पास स्थित नगर वन लुधावली में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधा लगाया।

132 दिव्यांगो को हुआ सहायक उपकरण का वितरण– भारत सरकार की एडिप योजना अंतर्गत दिव्यांगजनों को सहायक उपकरण वितरण किए गए। जिला स्तरीय कार्यक्रम में प्रभारी मंत्री प्रद्युमन सिंह तोमर शामिल हुए।सामाजिक न्याय और दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग एवं नगरपालिका परिषद शिवपुरी, भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम एलिम्को के सहयोग से यह उपकरण प्रदान किए गए। जिसमें 132 दिव्यांगजनों को कुल 220 उपकरणों का वितरण किया गया। वितरित किए गए सहायक उपकरणों में मोटोराइड ट्राइसाईकिल 48, ट्राइसाईकिल 40, व्हील चेयर 9, छोटे साइज की वैशाखी 2, ब? साइज की वैशाखी 60, वोकिंग स्टिक 12, मानसिक बच्चो की व्हीलचेयर 2, दृष्टिबाधित बच्चों हेतु किट 4, बच्चों के लिए छ? 3, मंदबुद्धि बच्चों की किट 4, कान मशीन 32 शामिल है।

बुढ़वा मंगल पर कांक्षी सरकार का हुआ अभिषेक कर हुई महाआरती,लगायागया छप्पन भोग

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक पुष्पांजली टुडे

दबोह- जिले के दबोह क्षेत्र के सुप्रसिद्ध प्राचीन धार्मिक स्थल कांक्षी सरकार पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बुढ़वा मंगल पर श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा।सर्वप्रथम अंजनी पुत्र हनुमान जी महाराज का अभिषेक किया गया तदोपरांत भगवान हनुमान जी की आरती श्री श्री 1008 महंत रामदास महाराज के कृपापात्र मन्दिर के पुजारी नाटी महाराज द्वारा की गई।इसके बाद सामूहिक संगीतमय सुंदरकांड पाठ का भी आयोजन किया गया।यहां फूल बंगला एवं छप्पन भोग की मनोहर झांकी भी लगाई गई।उसके बाद बाल भोग का वितरण किया गया साथ ही दोपहर से देर रात्रि तक भव्य विशाल भंडारे का आयोजन हुआ।जिसमे बड़ी संख्या में की मध्यप्रदेश,उत्तरप्रदेश व अन्य जगहों से आए हुए श्रद्धालुओं ने भोजन प्रसादी ग्रहण की।मान्यता है कांक्सी सरकार का मन्दिर एक ऐसा रमणीक,मनोरम स्थल है जहां हर मंगलवार व शनिवार को दर्शन करने के लिए बड़ी तादात में लोग पहुंचते हैं।यहां भगवान बजरंगी को मजिस्ट्रेट की उपाधि से जाना जाते हैं और यहां दर्शन मात्र से रुके पड़े न्यायालीन मामलों का हल निकल आता है।कांक्सी सरकार का मन्दिर भिंड जिले में ही नहीं बल्कि मध्यप्रदेश व उत्तरप्रदेश,राजस्थान के कई जिलो में भी जाना जाता हैं।माना जाता है यहां जो भी श्रद्धालु सच्चे मन से प्रार्थना करता करता है उसके संकट समाप्त हो जाते हैं।यह धाम

दबोह से लगभग 6 से 7 कि.मी. और लहार से 18 किलोमीटर पर स्थित हैं।स्थानीय लोगों की मानें तो विगत 60 वर्ष पूर्व कांक्सी सरकार झाड़ियों के बीचो-बीच सिर्फ एक चबूतरे पर विराजमान थे।जिन्हें पहली बार बिजोरा के नागा बाबा ने देखा था।तब से नागा बाबा यहीं निवासरत होकर पूजा अर्चना करने में लग गए थे।यहां बुढ़वा मंगल के अवसर पर विशाल भंडारे भी आयोजन हुआ,जिसमे हजारो की संख्या में भक्तों ने प्रसादी ग्रहण की।सम्पूर्ण कार्यक्रम की व्यवस्था में एसडीओपी लहार के निर्देशन में दबोह थाना प्रभारी राजेश शर्मा अपने दलबल के साथ तैनात रहे और मन्दिर पर सम्पूर्ण व्यवस्था को बखूबी सम्भाला,जिसके चलते मंदिर समिति द्वारा प्रशासन की अच्छी व्यवस्था के लिए सभी का आभार प्रकट किया गया।

मजिस्ट्रेट की उपाधि से जाने जाते हैं श्री कांक्षी सरकार-मान्यता है कि श्री कांक्षी सरकार हनुमान जी के जो भी भक्त पांच मंगलवार की परिक्रमा कर लेता है वह उनकी मनोकामना अवश्य पूर्ण करते हैं।बताया जाता है कि श्री कांक्षी सरकार कोर्ट,कचहरी,जमीन जायजाद वाले फैसले जल्दी सुनाते हैं जिसके चलते उन्हें मजिस्ट्रेट की उपाधि मिली है।बताया जाता है कि जो लोग कोर्ट कचहरी से ज्यादा परेशान रहते हैं वह तो अपनी फाइल ही भगवान के चरणों के अर्पित कर जाते है और सब उनके भरोसे छोड़ देते हैं।

ऑर्गेनिक तरीके से किया गणपति विसर्जन

पुष्पांजली टुडे

गोसपुरा नंबर 1 पंजाबी मोहल्ले में 07 सितंबर को धूम धाम से गणेश जी की स्थापना की गई जिनमें गागू सिंह , हर्षित गुप्ता कृष्णकांत यादव प्रशांत यादव अखिल गुप्ता शुभ गुप्ता आदि शामिल थे ।, सभी मोहलेवासियो ने 11 दिन तक पूरी आस्था और भक्ति भाव से बप्पा की पूजा की , और विसर्जन 17 सितंबर को कही बाहर न जाकर सभी लोगों ने अपनी गली में ही करने का निर्णय लिया,सभी लोगों ने पूरे जोश और उत्साह के साथ एवं गणपति बप्पा मोरया अगले वर्ष तू जल्दी आ , के नारों के साथ बप्पा को विदा किया।और बप्पा के विसर्जन के बाद उनकी प्रतिमा की मिट्टी को अपने अपने घर के पौधों में डालने का निर्णय लिया ।

भाजपा नेता अनर्गल बयानबाजी कर देश में साम्प्रदायिक सद्भाव बिगाड़ने का प्रयास कर रहे हैं - मानसिंह कुशवाह

नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के परिजनों के बलिदानों को भुलाया नहीं जा सकता

दैनिक पुष्पांजली टुडे

कांग्रेसियों ने केंद्रीय रेल राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू एवं उत्तर प्रदेश के राज्य मंत्री रघुराज सिंह के विरूद्ध अपराधिक प्रकरण दर्ज करने की मांग की

भिण्ड । लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष एवं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी के विरूद्ध दिनांक 15 सितम्बर, 2024 को केन्द्रीय रेल राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू ने सार्वजनिक रूप से कहा कि राहुल गांधी देश के नंबर वन आंतकी है,उनके विरूद्ध ईनाम घोषित होना चाहिए बिट्टू ने यह भी कहा कि वे हिन्दुस्तानी नहीं है,उन्हें देश से प्रेम नहीं है तथा देश तोड़ने,बम व बारूद, गोले बनाने जैसे ट्रेनों व बसों को दुर्घटनाग्रस्त करने में उनका हाथ है। राहुल गांधी पर आतंकी होने का ईनाम घोषित होना चाहिए । कांग्रेस कमेटी जिलाध्यक्ष मानसिंह कुशवाहा ने कहा कि जबकि पूरा देश जानता है,कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के पिता स्व. राजीव गांधी ने देश के लिए बलिदान दिया है, उनकी दादी स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी ने देश के लिए शहादत दी है,उनके परिजनों के बलिदानों को भुलाया नहीं जा सकता तथा राहुल गांधी की रगो में उनका ही रक्त बह रहा है,और वह सच्चे देश भक्त है,उनके प्रति अपशब्दों

का सार्वजनिक रूप से प्रयोग उनका अपमान किया गया है । श्री कुशवाहा ने कहा कि दिनांक 16 सितम्बर 2024 को इंदौर में उत्तर प्रदेश के राज्य मंत्री रघुराज सिंह ने सार्वजनिक रूप से कहा कि राहुल गांधी इस देश का नंबर वन आतंकवादी है,क्योंकि वो इस देश को डिवाईड एंड रूल,अंग्रेज मर गए औलाद छोड़ गए,ना तो इनका कोई धर्म है,बाबा थे मुस्लिम थे बाप हो गए क्रिश्यचयन ना ये मुसलमान और ना हिन्दू रहे,ये तो ऐसी पांचवी जाति बन गई इन्हें किसी के साथ सरोकार नहीं है,हिन्दुस्तान से इनका कोई लेना देना नहीं है, हिन्दुस्तान को लुटेरे के रूप में इटली से आए है, इसलिए ये नंबर एक आतंकवादी है । श्री कुशवाहा ने कहा कि रघुराज सिंह द्वारा राहुल गांधी लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष एवं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष के प्रति अपशब्दों का प्रयोग कर उनका सार्वजनिक रूप से अपमान किया गया है,उनके प्रति अनर्गल बयानबाजी कर देश में अशांति फैलाने का प्रयास किया गया है।

कांग्रेसजनों ने देहात थाना प्रभारी को शिकायती आवेदन पत्र सौपकर उक्त दोंनो भाजपा नेताओं के अनर्गल बयानबाजी तथा राहुल गांधी का अपमान करने तथा उन्हें आतंकी कहने से कांग्रेसजन आहत हुए है।श्री कुशवाहा ने केन्द्रीय राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू एवं उत्तर प्रदेश के राज्य मंत्री रघुराज सिंह के विरूद्ध भारतीय न्याय संहिता के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर उन्हें तत्काल गिरफ्तार किया जाकर उनके विरूद्ध न्यायालय में प्रकरण दर्ज कराकर कठोर से कठोर दंड दिलाया जाएं,जिससे कि देश को बाटकर देश में साम्प्रदायिक सद्भाव बिगाड़ने वाली ताकतों को सबक मिल सके ।

आवेदनकर्ताओं में कांग्रेस जिलाध्यक्ष मानसिंह कुशवाहा,महिला कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती रेखा भदौरिया,जिला उपाध्यक्ष हरनारायण शर्मा,जिला महासचिव राजवीर बघेल,रमाशंकर सिंह,दीपू दुबे,बॉबी,आकाश,रामबरन सिंह कुशवाहा सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

रक्तदान जीवनदान है, एक यूनिट रक्ड़तदान से चार लोगों का जीवन बचाया जा सकता है - कलेक्टर

कलेक्ड़टर ने सभी से रक्तदान में सहभागी बनने की अपील की

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस के अवसर पर जिला चिकित्सालय भिण्ड में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया । इस अवसर पर कलेक्टर भिण्ड संजीव श्रीवास्तव द्वारा रक्तदान किया गया।कलेक्टर श्री श्रीवास्तव ने बताया कि रक्तदान महादान माना जाता है, एक यूनिट रक्ड़तदान से चार लोगों

का जीवन बचाया जा सकता है। रक्तदान से लोगों को नई जिंदगी मिलती है और समाज रक्तदाता के इस सराहनीय कार्य को हमेशा याद रखता है। रक्तदान से न तो शरीर में बीमारी आती है न शरीर कमजोर पड़ता है। रक्तदान करने से ह्रदयाघात होने की संभावनाऐं कम होती हैं, क्योंकि रक्तदान से खून का थक्का नहीं जमता, खून कुछ मात्रा में पतला हो जाता है। वजन कम करने में मदद मिलती है, शरीर में नये ब्लड सेल्स बनने के कारण तंदुरूस्ती आती है। लिवर से जुड़ी समस्याओं से राहत मिलती है, आयरन की मात्रा संतुलित रहती है, कैंसर का खतरा कम रहता है, इसलिये जीवन रक्षा हेतु रक्तदान अवश्य करें। किसी की जिंदगी बचाकर हम एक नेक कार्य करते हैं।

रक्तदान करने से हमें आत्म संतुष्टि मिलती है - सांसद श्रीमती राय

सांसद श्रीमती संध्या राय ने प्रधानमंत्री के जन्मदिवस पर जिला चिकित्सालय में किया

दैनिक पुष्पांजली टुडे

भिण्ड । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर भिण्ड - दतिया सांसद श्रीमती संध्या राय ने जिला चिकित्सालय भिण्ड में आयोजित रक्तदान शिविर के दौरान रक्तदान में हिस्सा लिया और स्वयं रक्तदान कर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन किया।

इस अवसर पर क्षेत्रीय सांसद श्रीमती संध्या राय ने रक्तदान के महत्व को प्रतिपादित करते हुए कहा कि हमारे दान किए गए रक्त से कई लोगों की जिंदगी बचती है। रक्तदान का कितना महत्व है, इसका अहसास हमें तब होता है, जब हमारा कोई निकटतम व्यक्ति जिंदगी और मौत के बीच जूझ रहा होता है। रक्तदान कर हम जहां एक ओर किसी की जान बचाते हैं, वहीं दूसरी ओर इससे

जबर्दस्त आत्म संतुष्टि मिलती है। उन्होंने कहा कि कई लोग रक्तदान को लेकर फैली भ्रांतियों के कारण रक्तदान करने से कतराते हैं, जबकि इससे कोई हानि नहीं होती बल्कि रक्तदान से हमारा शरीर स्वस्थ और चुस्त-दुरुस्त रहता है। अत~ हम सभी को रक्तदान के लिए आगे आना चाहिए। यह एक प्रेरणादायी कार्य है। पीड़ितों की सेवा से बड़कर कोई दूसरा कार्य नहीं हो सकता। सांसद श्रीमती राय ने कहा कि रक्तदान इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका किसी फैक्ट्री में निर्माण नहीं हो सकता। आकस्मिक रूप हुई दुर्घटना में घायल और गंभीर रूप से पीड़ितों का जीवन बचाने के लिए दान किया गया रक्त ही काम आता है। अत~ हमें रक्तदान के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

बाल प्रतिभाओं ने दी मनमोहक प्रस्तुति

दैनिक पुष्पाजंली टुडे

बेंगलूरू।कर्नाटक सरकार शिक्षा विभाग द्वारा राजाजी नगर क्षेत्र के सरकारी प्राथमिक विद्यालय एवं सरकारी अनुदानित प्राथमिक विद्यालय के लिए बालमोहन विद्या केंद्र में आयोजित प्रतिभा कारंजी समापन समारोह में बाल प्रतिभाओं के साथ मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत मौजूद थे।

स्वच्छता ही सेवा है पखवाड़े के अंतर्गत स्वच्छता शपथ कार्यक्रम का हुआ आयोजन

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

शासन के निर्देशानुसार शासकीय कन्या महाविद्यालय खरगोन में 17 सितंबर को संस्था की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा प्राचार्य डॉ. एम.के. गोखले की अध्यक्षता में स्वच्छता ही सेवा है 2024 पखवाड़े की शुरूआत की गई। इसके अंतर्गत प्राचार्य डॉ. गोखले द्वारा छात्राओं को स्वच्छता का महत्व बताया गया एवं इस पूरे पखवाड़े को मनाने का आव्हान किया गया। इसके पश्चात छात्राओं को स्वच्छता की शपथ दिलवाई गई। कार्यक्रम में प्रो. प्रीति हाड़ा, डॉ.सेवन्ती डावर, डॉ. ममता गोयल, डॉ. अनुराधा ठाकुर, डॉ. पवन नामदेव सहित सभी शैक्षणिक, अशैक्षणिक स्टाफ, रासेयो स्वयं सेविकाएं भारती पटेल, रजनी डुडवे, शीतल रंसोरे, दिव्या कुशवाह, उर्मिला बडोले, आरती पटेल एवं महाविद्यालय की छात्राएं उपस्थित रही। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार रासेयो प्रभारी डॉ. रफिया अड़ीड़ ने किया।

कलेक्टर श्री शर्मा ने की सड़क दुर्घटना में मृतक एवं घायल को सहायता राशि मंजूर

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

कलेक्टर एवं दावा निपटान आयुक्त श्री कर्मवीर शर्मा ने सड़क दुर्घटना के दो प्रकरणों में मृतक दिनेश पिता जामसिंह एवं घायल गुलाब पिता कालु को सहायता राशि मंजूर की है। ज्ञात हो कि 23 मार्च 2023 को मांगरूल बुजुर्ग के दिनेश पिता जामसिंह की खण्डवा खरगोन रोड़ पर अज्ञात वाहन से सड़क दुर्घटना में मुत्यु हो गई थी। इस पर कलेक्टर श्री शर्मा ने मृतक दिनेश के विधिक प्रतिनिधि के रूप में वैधानिक उत्तराधिकारी उनके पिता जामसिंग को मोटरयान दुर्घटना अभियान पीड़ित प्रतिकर स्कीम 2022 के अंतर्गत 02 लाख रुपये की सहायता राशि मंजूर की है।इसी प्रकार 09 सितंबर 2022 को रामेश्वर टॉकीज रोड़ खरगोन के गुलाब पिता कालु की घुघरियाखेड़ी-देवलगांव खण्डवा रोड़ पर अज्ञात वाहन से सड़क दुर्घटना में घायल हो गये थे। घायल हुए गुलाब पिता कालू को कलेक्टर श्री कर्मवीर शर्मा ने उन्हें मोटरयान दुर्घटना पीड़ित प्रतिकर योजना के तहत 50 हजार रुपये की सहायता राशि मंजूर की है।

20 सितंबर को रोजगार मेले का आयोजन

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

कलेक्टर श्री कर्मवीर शर्मा के मार्गदर्शन में जिले के युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 20 सितंबर को प्रातः 11.00 बजे से दोप. 3.00 बजे तक शासकीय आई.टी.आई. कॉलेज, उमरखली रोड खरगोन में रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। रोजगार मेले में निजी कम्पनियों द्वारा युवक-युवतियों की भर्ती की जाएगी।जिला रोजगार अधिकारी श्रीमती प्रीति बाला सस्ते ने बताया कि 8वीं, 12वीं, आईटीआई उत्तीर्ण एवं स्नातक, युवक एवं युवतियां जिनकी उम्र 18 से 30 वर्ष हो, वह अपनी शैक्षणिक योग्यताओं की अंकसूचियां, रोजगार कार्यालय का पंजीयन (अनिवार्य), आधार कार्ड, जाति एवं मूल निवासी के प्रमाण पत्रों की छाया प्रतियां तथा अपने पासपोर्ट साइज के दो फोटो लेकर आई.टी.आई कॉलेज में उपस्थित होकर रोजगार मेले में लाभ उठा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिये हेल्पलाइन नम्बर 07282-232787 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

पीएम स्वनिधी योजना में उत्कृष्ट कार्य के लिए नगरपालिका अध्यक्ष, सीएमओ एवं परियोजना अधिकारी भोपाल में सम्मानित

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो चीफ पुष्पांजलि टुडे

प्रधानमंत्री स्वनिधि समृद्धि योजना में उत्कृष्ट एवं सर्वोच्च कार्य करने के लिए नगरीय निकाय खरगोन को 01 से 10 लाख जनसंख्या श्रेणी में राज्य में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। 17 सितंबर को भोपाल में आयोजित कार्यक्रम में नगरीय प्रशासन मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय द्वारा नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती छाया जोशी, नगर पालिका सीएमओ श्री एमआर निगवाल एवं जिला शहरी विकास अभिकरण के परियोजना अधिकारी श्री उमेश जोशी को सम्मानित किया गया।

राहुल गांधी के खिलाफ अपशब्द बोलने वाले मंत्रियों पर प्रकरण दर्ज करने की मांग को लेकर ब्लांक कांग्रेस पार्टी ने गोहद थाना प्रभारी को सौंपा ज्ञापन

दैनिक पुष्पांजलि टुडे

गोहद। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष एवं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष श्री राहुल गांधी के विरुद्ध केंद्रीय रेल राज्य मंत्री एवं उत्तर प्रदेश के राज्य मंत्री द्वारा बोले गए अपशब्दों को लेकर अपराध दर्ज कराने की मांग लेकर मंगलवार को ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष आशीष गुर्जर के नेतृत्व में गोहद थाना प्रभारी मनीष धाकड़ को ज्ञापन सौंपा जिसमें उन्होंने बताया है कि दिनांक 15 सितम्बर, 2024 को केन्द्रीय रेल राज्य मंत्री रवनीत सिंह चिंटू ने सार्वजनिक रूप से कहा कि राहुल गांधी देश के मंचर बम श्रत्रिकी है उनके विरूद्ध ईनाम घोषित होना चाहिए बिड़द्दड़ ने यह भी कहा कि वे हिन्दुस्तानी नहीं है उन्हें देश में प्रेम नहीं है तथा देश तोड़ने, बम व सामय, गोले बनाने जैसे ट्रेनों व बसों को दुर्घटनाग्रस्त करने में उनका हाथ है, राहुल गांधी पर आतंकी होने का ईनाम घोषित होना चाहिए जबकि पूरा देश जानता है कि राहुल गांधी के पिता स्व. श्री राजीव गांधी ने देश के लिए बलिदान दिया है। उनकी दादी स्व. श्रीमती इंदिरा गांधी ने देश के लिए शहादत दी है तथा राहुल गांधी की रंगो में उनका ही रक्त बह रहा है तथा यह सच्चे देश भक्त है। उनके प्रति अपशब्दों का सार्वजनिक रूप से प्रयोग उनका अपमान किया गया है।उपरोक्त घटनाक्रम के अनुरूप ही दिनांक 16 सितम्बर 2024 को इन्दौर में उत्तर प्रदेश के राज्य मंत्री रघुराज सिंह द्वारा भी सार्वजनिक रूप से उन्हें कहा कि राहुल गांधी को हिन्दुस्तान में इनका कोई लेना ना देना नहीं है और हिन्दुस्तान में लुटेरे के रूप में इटली से आए है, इसलिए ये नंबर एक आतंकवादी है। गुर्जर ने कहा कि राज्य मंत्री रघुराज सिंह द्वारा राहुल गांधी लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष एवं अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष के प्रति अपशब्दों का प्रयोग कर उनका सार्वजनिक रूप में अपमान किया गया है उनके प्रति अनर्गल बयानबाजी कर देश में अशांति फैलाने का प्रयास किया गया है। उन्होंने थाना प्रभारी से कांग्रेसजनों की ओर से निवेदन किया गया है कि उपरोक्त दोनों भाजपा नेताओं एवं केन्द्रीय राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू एवं उत्तर प्रदेश के राज्य मंत्री रघुराज सिंह के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर उन्हें तत्काल गिरफ्तार किया जाए ड्ज्ञापन देने वालों में गणेशराम शर्मा, विजय टोनी मुद्गल, प्रमोद शुक्ला, राजेंद्र परिहार,गौरव कौली, साबू ख़ान, कैलाश माहौर, पिंकी उचाडिया, महेश कौशल, सतीश गुर्जर, विजय निगम,आदि

छात्राओ ने स्वच्छता के प्रति 100 घंटे श्रमदान करने का लिया संकल्प

दैनिक पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय मे स्वच्छता ही सेवा 2024 पखवाड़े के अंतर्गत स्वच्छता शपथ कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमे छात्राओ ने स्वच्छता के प्रति सजग रहने का और हर वर्ष 100 घंटे यानी हर सप्ताह 2 घंटे श्रमदान करने का संकल्प लिया। तथा अन्य व्यक्तियों को भी इस कार्य के लिए प्रेरित करने की शपथ ली। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की कार्यक्रम अधिकारी डॉ संगीता सोमवंशी द्वारा स्वच्छता शपथ दि गयी । संपूर्ण कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ जयश्री चौहान के संरक्षण और मार्गदर्शन मे हुआ। कार्यक्रम मे छात्राओ की उपस्थिति महत्वपूर्ण रही।

किसान संघ ने बलराम जयंती की शोभा यात्रा निकाल कर दिया त्रीस्तरीय ज्ञापन

पुष्पांजली टुडे

ग्वालियर। भारतीय किसान संघ ने अपने आराध्य देव भगवान बलराम जी के जन्मोत्सव पखवाड़े का समापन 16 सितंबर को बलराम जी की शोभा यात्रा सूर्य नमस्कार चौराहे से गोविंदपुरी होते हुए कलेक्टर कार्यालय तक निकाली, जिसमें जिले के प्रत्येक गांव से बड़ी संख्या में किसान एकत्रित हुए किसानों ने बड़े हर्षोल्लास के साथ भगवान बलराम जी की पूजा अर्चना एवं प्रसादी वितरण कर शोभा यात्रा निकाली, महानगर अध्यक्ष श्री कीरत सिंह राणा जी ने बताया कि भगवान बलराम जी की शोभायात्रा में जिले भर से लगभग 300 से अधिक बड़ी संख्या में किसानों ने हिस्सा लिया, कार्यक्रम में किसान संघ के प्रदेश, प्रांत एवं संभागीय पदाधिकारीयों ने भी हिस्सा लिया, कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान बलराम जी के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया कार्यक्रम का संचालन

महानगर के मंत्री अनुज अग्रवाल जी द्वारा किया गया, तत्पश्चात कलेक्टर कार्यालय पहुच कर माननीय प्रधानमंत्री जी, मुख्यमंत्री जी एवं जिले की स्थानीय समस्याओं को लेकर माननीय कलेक्टर महोदय के नाम से त्रिस्तरीय ज्ञापन दिया गया, 16 सितंबर को किसान संघ ने ज्ञापन दिवस के रूप मे मनाया, जिसमे देश के प्रतेक प्रांत एवं जिले स्थर पर ज्ञापन दिया गया। ज्ञापन के माध्यम से सरकारों से किसानों को सोयाबीन का भाव ड़6000 प्रति क्विंटल किए जाने की मांग की गए! इस अवसर पर कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री भवानी शंकर जी प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य, प्रांत उपाध्यक्ष डॉ. पुलंदर सिंह राणा जी, संभागीय कोषाध्यक्ष श्री राजेंद्र सिंह जाट, संभागीय उपाध्यक्ष श्री वीरेंद्र शर्मा जी, जिला अध्यक्ष रामाधार जी, जिला उपाध्यक्ष राम सिंह किरार जी, जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र नायक जी, जिला कोषाध्यक्ष गजेंद्र सिंह राणा जी, जिला मंत्री नंदकिशोर बघेल, महानगर मंत्री जसवंत सिंह यादव जी, जिला प्रचार प्रमुख जंडेल सिंह गुर्जर, सह मंत्री श्री अनुज अग्रवाल जी सह मंत्री श्री अमित शर्मा जी, विजयपाल राणा जी, सचिन सक्सेना आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे

सामाजिक न्याय मंत्री ने ओरछा के कंचनाघाट में श्रमदान कर स्वच्छता की सेवा अभियान का शुभारंभ

भोपाल । सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण, उद्यानिकी तथा खाद्य प्रसंसकरन मंत्री एवं निवाड़ी जिले के प्रभारी मंत्री नारायण सिंह कुशवाह ने प्रधानमंत्री के जन्मदिवस पर कंचनाघाट ओरछा से स्वच्छता ही सेवा अभियान का शुभारंभ किया। इस अवसर पर विधायक निवाड़ी अनिल जैन, अखिलेश अयाची सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।मंत्री श्री कुशवाह ने कहा कि स्वच्छता को जीवन का हिस्सा बनाना आवश्यक है और यह सिर्फ एक दिन का काम नहीं, बल्कि निरंतर प्रयास की मांग करता है। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे अपने आसपास के क्षेत्रों को स्वच्छ बनाए रखने में सहयोग करें और स्वच्छ भारत के सपने को साकार करने में अपना योगदान दें। उन्होंने कहा कि स्वच्छता न केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए, बल्कि मानसिक शांति के लिए भी महत्वपूर्ण है। मंत्री श्री कुशवाह ने ओरछा में जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों के साथ राज्यपाल श्री पटेल के मुख्य आतिथ्य तथा मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में कुशाभाऊ ठाकरे सभागार भोपाल में आयोजित स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा 2024 और प्रदेश के 50 जिला चिकित्सालयों में प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्रों के शुभारंभ कार्यक्रम का सीधा प्रसारण देखा व सुना।

संगीत वि.वि. के कुलपति प्रो. नाहर भाषाई कला संगम-2024 सम्मान से सम्मानित

ग्वालियर। हाल ही में हिंदी दिवस के अवसर हिंदुस्थान समाचार बहुभाषी न्यूज एजेंसी द्वारा काशी विश्वनाथ धाम परिसर वाराणसी के त्र्यंबेकश्वर सभागार में भाषाई कला संगम का सांस्कृतिक आयोजन किया गया था। इस कायर्क्रम में देश के सुप्रतिष्ठित संगीतज्ञ, सितार वादक और राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. (पं.) साहित्य कुमार नाहर को 'भाषाई कला संगम-2024' सम्मान से सम्मानित किया गया। प्रो. (पं.) नाहर को यह सम्मान उनकी संगीत सेवा, दीर्घ अनुभव और संगीत में उनके अनमोल योगदान के लिए प्रदान किया गया है। कायर्क्रम में मुख्य अतिथि बिहार के उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, मुख्य वक्ता आनंदधाम ट्रस्ट वृंदावन के सद्गुरू रितेश्वर महाराज, विशिष्ट अतिथि उ.प्र. के पूर्व संस्कृति एवं पयर्टन मंत्री डॉ. नीलकंठ तिवारी रहे। कायर्क्रम की अध्यक्षता हिंदुस्थान समाचार समूह के प्रमुख अरविंद माडीर्कर ने की। ज्ञांतव्य है संगीत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो.(पं.) नाहर जी प्रदशर्न कला(सितार) के आकाशवाणी व दूरदशर्न के टॉप ग्रेड कलाकार हैं और लगभग 45 वर्षो से आकाशवाणी सहित देश के अनेक राष्ट्रीय मंचों पर अपने सफल कायर्क्रम प्रस्तुत करते आ रहे हैं। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में 40 से अधिक वर्षों तक अध्यापन किया है। संगीत पर उनकी कई पुस्तकें हैं और लगभग 21 विद्याथिर्यों ने उनके निदेर्शन में शोध उपाधि प्राप्त की है। प्रो. (पं) नाहर तानसेन समारोह सहित देश के कई प्रतिष्ठित संगीत समारोहों में सितार वादन की बेहतरीन प्रस्तुति दे चुके हैं।

श्रद्धालुओं के लिए की शीतल शरबत की व्यवस्था

दैनिक पुष्पाजंली टुडे

मुम्बई - विरार ईस्ट पालघर में विवा जांगिड़ व्यापारी संघ मनवेलपाड़ा द्वारा श्रद्धालुओं के लिए शीतल शरबत की व्यवस्था मनवेलपाडा मैं की गई। यह पहल संघ की ओर से श्रद्धालुओं की सेवा में एक महत्वपूर्ण कदम था। स्थानीय लोगों ने इस पहल की सराहना की और संघ के प्रयासों की प्रशंसा की। गणेश उत्सव पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने शरबत ग्रहण किया।

निगमायुक्त को निरीक्षण में बस स्टैंड पर मिली, आश्रय भवन और किला भी देखा

ग्वालियर। निगम आयुक्त अमन वैष्णव ने स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम एवं सफाई व्यवस्था को लेकर शहर के अनेक स्थलों का निरीक्षण किया। इसके साथ ही ग्वालियर किले पर नवीन सैल्फी पॉइंट की जगह चिन्हित कर सेल्फी पाइंट बनाने के निर्देश भी निगमायुक्त ने दिये।सोमवार को निगम आयुक्त अमन वैष्णव ने सफाई व्यवस्था को लेकर बस स्टैंड का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्हें बस स्टैण्ड पर गंदगी मिली। निगमायुक्त ने तत्काल गंदगी को साफ कर आगे से गंदगी नहीं होने देने के निर्देश स्वास्थ्य अधिकारी किशोर चैहान को दिए। इसके साथ ही उन्होंने बस स्टैंड पर बने आश्रय भवन का निरीक्षण किया। बस स्टैण्ड स्थित रैन बसेरा का निरीक्षण करने पर रैन बसेरा में ठहरने वाले प्रत्येक व्यक्ति का पहचान-पत्र जमा करने एवं रिकार्ड संधारित करने के निर्देश उपायुक्त अनिल दबे को दिये। इसके साथ ही रैन बसेरा में लाइव स्ट्रीमिंग, कैमरे के टेंडर आदि की कार्यवाही त्वरित करने के निर्देश निगमायुक्त ने उपायुक्त डॉ प्रदीप श्रीवास्तव को दिये गये। निगमायुक्त ने दीनदयाल रसोई का निरीक्षण किया। यहां के बाद निगमायुक्त ने ग्वालियर किले का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने किला स्थित निर्मित होने वाले सेल्फी पॉईंट के स्थान का निरीक्षण किया और तीन नवीन सैल्फी पाइंट का निर्माण करने के निर्देश प्रभारी उपायुक्त अमित गुप्ता को दिए गए।

सभापति ने किया वार्ड 34 में नाला निर्माण कार्य का भूमिपूजन

ग्वालियर। वार्ड 34 पारदी मौहल्ले में स्थित नाला निर्माण का भूमिपूजन सोमवार को क्षेत्रीय पार्षद एवं उपनेता विपक्ष रवि तोमर के अथक प्रयास से सभापति मनोज सिंह तोमर द्वारा किया गया। इस अवसर पर सभापति मनोज सिंह तोमर ने कहा कि क्षेत्र में जो भी विकास कार्य किए जा रहे हैं उनमें गुणवत्ता का पूरा ध्यान रखा जाए। इसके साथ ही कहा कि बरसात के बाद क्षेत्र में और अधिक तेजी से सड़कों को बनाने का कार्य किया जाएगा।उल्लेखनीय है कि वार्ड क्रमांक 34 में स्थित पारदी मोहल्ला में एक नाला जिसके कारण बरसात में पारदी मोहल्ले में जलभराव की समस्या होती थी । उसके निदान के लिए नाले का पुनः निर्माण किया जाना था, जिसका सभापति मनोज सिंह तोमर ने भूमिपूजन किया। इस अवसर पर उपनेता सत्तापक्ष रवि तोमर, वरिष्ठ नेता श्री जंगबहादुर सिंह तोमर, ओमप्रकाश धानोल, भारत, गौरव कुलश्रेष्ठ, जितेंद्र तोमर, अन्नू तोमर, सुरेंद्र बाशाक्य सहित बडी संख्या में क्षेत्रीय गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

माधव राष्ट्रीय उद्यान में बाघिन MT-3 ने नन्हें शावकों को दिया जन्म

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे

शिवपुरी- माधव राष्ट्रीय उद्यान शिवपुरी में बाघिन MT-3 ने नन्हें शावकों को जन्म दिया हैं। यह खुशी आज दुगनी को गई है, क्योंकि आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का जन्मदिन है।माधव राष्ट्रीय उद्यान शिवपुरी के उप संचालक ने बताया कि माधव राष्ट्रीय उद्यान शिवपुरी सभी को नन्हें शावकों के आगमन की बधाई देता है। नन्हें शावकों का आना इस बात का द्योतक है कि माधव राष्ट्रीय उद्यान शिवपुरी में बाघों की पुर्नस्थापना सफल रही है और भविष्य में यहाँ बाघों की एक अच्छी संख्या स्थापित होगी। लगभग डेढ साल के इन्तजार के बाद माधव राष्ट्रीय उद्यान शिवपुरी में खुशी की लहर आई है। वर्षों बाद माधव राष्ट्रीय उद्यान में बाघ के नन्हें शावकों का आगमन हुआ है। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व से 10 मार्च 2023 को आई बाघिन स्न्न-3 ने नन्हें शावकों को जन्म दिया है। एक शावक की तस्वीर आज मंगलवार को कैमरा ट्रेप में प्राप्त हुई है।

थाना भौंती पुलिस ने मारपीट कर हत्या करने वाले आरोपीगणों को महज 36 घंटे में किया गिरफ्तार

पत्रकार हरिओम परिहार

श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय श्री अमन सिंह राठौड़ के निर्देशन में श्रीमान अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महोदय श्री संजीव मुले के मार्गदर्शन और श्रीमान एसडीओपी महोदय पिछोर श्री प्रशांत शर्मा के नेतृत्व में थाना भौंती पुलिस ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करते हुए रश्मि लोधी, नीरज लोधी, मेहरवान सिंह लोधी, सरूपी लोधी की मारपीट करने एवं सिरनाम सिंह लोधी की मारपीट कर हत्या करने वाले आरोपीगण ओमकार पुत्र स्व. देवलाल लोधी उम्र 56 साल, भगवान सिंह पुत्र ओमकार लोधी उम्र 27 साल एवं लवकुश पुत्र ओमकार लोधी उम्र 25 साल निवासीगण ग्राम बमेरा थाना भौंती को अपराध पंजीबद्ध होने के बाद मात्र 36 घंटे में गिरफ्तार कर आरोपीगणों से घटना में प्रयुक्त आलाजरर बरामद किये गये । ामला इस प्रकार है कि दिनांक 16.09.24 को फरियादिया रश्मि लोधी पत्नि नीरज लोधी उम्र 23 साल निवासी ग्राम बमेरा थाना भौंती की रिपोर्ट पर से आरोपीगण ओमकार पुत्र देवलाल लोधी, भगवान सिंह पुत्र ओमकार लोधी एवं लवकुश पुत्र ओमकार लोधी निवासीगण ग्राम बमेरा के विरूद्ध थाना भौंती पर अपराध क्र. 258/24 धारा 115(2),296, 351(3),3(5) बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध करते हुए घायल व्यक्तियों को इलाज हेतु सीएचसी पिछोर ले जाया गया जहाँ से गंभीर घायल मजरूब मेहरवान सिंह लोधी व सिरनाम सिंह लोधी निवासीगण बमेरा को मेडीकल कॉलेज शिवपुरी इलाज हेतु रैफर किया गया, दौराने इलाज घायल मजरूब सिरनाम सिंह लोधी पुत्र बैजनाथ लोधी उम्र 67 साल निवासी बमेरा की मेडकील कॉलेज शिवपुरी में मृत्यु हो गयी जिस पर से प्रकरण में धारा 109, 103(1) बीएनएस इजाफा की गयी एवं मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया गया, श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय श्री अमन सिंह राठौड़ ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल एसडीओपी पिछोर को आरोपीगणों की गिरफ्तारी के निर्देश दिए, श्रीमान एसडीओपी श्री प्रशान्त शर्मा के नेतृत्व में थाना प्रभारी भौंती निरीक्षक गीतेश शर्मा ने पुलिस टीम बनाकर मारपीट कर हत्या करने वाले आरोपीगणों की गिरफ्तारी हेतु घटना स्थल के आस-पास के गांवों में पूछताछ की गई एवं मुखविर मामूर किये गये तत्पश्चात जरिए मुखबिर सूचना मिली कि उक्त अपराध के आरोपीगण भागने की फिराक में चौमूहा तिराहे पर किसी वाहन का इंतजार कर रहे है, तब थाना भौंती पुलिस ने महज 36 घंटो के अंदर कडी मेहनत कर फोर्स की मदद से उक्त तीनों आरोपीगणों को घेर कर पकडा व नाम पता पूछने पर अपने नाम ओमकार पुत्र स्व. देवलाल लोधी उम्र 56 साल, भगवान सिंह पुत्र ओमकार लोधी उम्र 27 साल एवं लवकुश पुत्र ओमकार लोधी उम्र 25 साल निवासीगण ग्राम बमेरा थाना भौंती का बताया जिन्हे गिरफ्तार कर घटना में प्रयुक्त आलाजरर बरामद किये गये एवं उक्त आरोपीगणों को आज माननीय न्यायालय में पेश किया गया ।

आरोपीगणों की गिरफ्तारी में निरीक्षक गीतेश शर्मा थाना प्रभारी भौंती के अलावा उनि. रामनिवास शर्मा, प्रआर.224 राजेश शर्मा, आर.1188 धर्मवीर रावत, आर.534 रामप्रसाद गुर्जर एवं आर.98 ब्रजराज सिंह थाना भौती की महत्वपूर्ण भूमिका रही ।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478